तत्सम - तद्भव

* तत्सम शब्द :-

जो शब्द संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के अथवा बहुत कम परिवर्तन के हिंदी भाषा में ग्रहण किए गए हैं, उन्हे तत्सम शब्द कहते है।

OR

जो शब्द संस्कृत से हिंदी में आए और अपना मूल संस्कृत रूप लगभग बनाए रखे, उसे तत्सम शब्द कहते है।

'तत्सम' = तत् + सम

- तत् = उसके (संस्कृत के)
- सम = समान

अर्थात् जो संस्कृत के समान रहे, वे तत्सम कहलाते हैं।

Example :- अग्नि, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, दन्त, कर्ण, मुख

* तद्भव शब्द :-

संस्कृत के वे शब्द जो प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषाओं से होते हुए हिंदी में आए और जिनके मूल रूप में परिवर्तन हो गया, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

OR

जो शब्द संस्कृत से उत्पन्न हुए, लेकिन समय के साथ उनके रूप और उच्चारण में परिवर्तन हो गया।

Example :- आग, सूरज, चाँद, रात, दाँत, कान, मुँह

तत्सम - तद्भव

तत्सम		तद्भव
1. ऐक्य (एकता/मेल)	–	एका
2. ओष्ठ	–	ओंठ (होंठ)
3. ऊर्ण	–	ऊन
4. कंकाति	–	कंघी
5. कूट	–	कूड़ा
6. कज्जल	–	काजल
7. कच्छप	–	कछुआ
8. कर्पट	–	कपड़ा
9. शलाका	–	सलाई (पतली सी तीली)
10. कपाट	–	किवाड़
11. क्षार	–	खार
12. क्षेत्र	–	खेत
13. खनि	–	खान
14. क्षीर	–	खीर
15. गेंद	⟷	कंदुक
16. गोधूम	–	गेहूँ
17. क्रोड	–	गोद
18. पक्व	–	पक्का (पका)
19. पंचदश	–	पंद्रह
20. प्रतिपदा	–	पड़वा (calender first day)
21. पंक्ति	–	पंगत
22. अक्षर	–	आखर / अच्छर
23. अक्षत	–	अच्छत / साबुत
23. अक्षि	–	आँख
24. शुष्क	–	सूखा
25. मूषक	–	चूहा
26. उष्ण	–	उमस
27. श्वेत	–	सफ़ेद
28. दधि	–	दही
29. दुग्ध	–	दूध
30. दम्पति	–	दोपतो
31. दंत	–	दान्त / दाँत
32. काकः	–	कौआ

तत्सम	-	तद्भव
33. कुष्ठ	-	कोढ़
34. कोकिल	-	कोयल
35. स्मरण	-	सुमिरन
36. शकुन	-	सगुन
37. स्वर्ग	-	सरग
38. सर्वस्व	-	सबकुछ
39. गौर	-	गोरा
40. स्तोक	-	थोड़ा
41. द्वार	-	दुआर
42. गज	-	हाथी
43. खर्पर	-	खप्पर
44. कवल	-	कौर
45. कः	-	कौन
46. पत्र	-	पत्ता
47. गर्दभ	-	गधा
48. पाषाण	-	पाहन
49. क्रयशक्ति	-	क्रशक्ति
50. कदली	-	केला
51. प्रतिवेशी	-	पड़ोसी
52. पिष्टिका	-	पीठी
53. परिकूट	-	परकोटा
54. ग्राम	-	गाँव
55. ग्रहण	-	गहन
56. गौ	-	गाय
57. पत्थर	-	प्रस्तर
58. पर्पट	-	पापड़
59. तीक्ष्ण	-	तीखा
60. सत्य	-	सच
61. आश्चर्य	-	अचरज
62. मत्स्य	-	मछली
63. मक्खन	-	मृक्षण
64. स्वप्न	-	सपना
65. भद्र	-	भला
66. षष्टि	-	साठ
67. अन्न	-	अनाज
68. आखेट	-	अहेर
69. अज्ञान	-	अनजान

तत्सम - तद्भव

70. अनार्य - अनाड़ी
71. कांस्यकार - कसेरा
72. कुठार - कुल्हाड़ा
73. कमल - कँवल
74. उत्पद्यते - उपजना
75. आयुक्त - आहुत
76. ताम्र - ताँबा
77. तपस्वी - तापसी
78. आम्रचूर्ण - तमचूर
79. ताम्बूलिक - तमोली
80. जृम्भिका - जँभाई
81. युवा - जवान
82. योगी - जोगी
83. जामातृ - जमाई
84. पिप्पल - पीपल
85. अट्टालिका - अटारी
86. समुद्र - समंदर
87. चक्र - चक्का/चाक
88. कोण - कोना
89. कर्ण - कान
90. अमृत - अमी/अमिय
91. अर्द्धपूरक - अधूरा
92. अणि - अनी
93. अमावस्या - अमावस
94. चंद्रिका - चाँदनी
95. ग्राहक - गाहक
96. सूचिका - सुई
97. संधि - सेंध
98. सूचना - सुध
99. चटिका - चिड़िया
100. चणक - चना

तत्सम - तद्भव Part 2

तत्सम		तद्भव	तत्सम		तद्भव
1. आमलक	-	आँवला	17. लेपन	-	लीपना
2. अमृत	-	आमिय	18. अलवण	-	अलोना
3. लघुच्छ	-	लच्छा	19. शुष्क	-	सूखा
4. लाक्षा	-	लाख	20. सलोना	-	श्यामल
5. लक्षपति	-	लखपति	21. चिक्कण	-	चिकना
6. गृह	-	घर	22. पुरातन	-	पुराना
7. सूत्र	-	सूत	23. शृंखला	-	साँकल
8. वंश	-	बाँस	24. आर्द्रक	-	अदरक
9. भाद्रपद	-	भादो	25. ताम्बूलिक	-	तमोली
10. गणना	-	गिनना	26. तडाग	-	तालाब
11. क्रोड	-	गोद	27. दृष्टि	-	दीठि / दीठ
12. आभीर	-	अहीर	28. धृष्ट	-	ढीठ
13. आतुर	-	अधीर	29. उत्साह	-	उछाह
14. भूखा	<-->	बुभुक्षित	30. उपवास	-	उवास
15. याति	-	जाति	31. उद्गत	-	उगना
16. भ्रू	-	भौं	32. उत्तिष्ठ	-	उठ

33. उज्ज्वल – उजाला

34. गोमय – गोबर

35. गोस्वामी – गुसाईं

36. ग्रामीण – गँवार

37. गौर – गोरा

38. व्याख्यान – बखान

39. श्रावण – सावन

40. सप्त – सात

41. श्वास – साँस

42. श्वश्रू – सास

43. शाक – साग

44. कदली – केला

45. कुक्षि – कोख

46. कीटक – कीड़ा

47. कंकति – कंघी

48. यूथ – जत्था

49. कर्तन – कतरन

50. कर्पास – कपास

51. कर्पट – कपड़ा

52. कर्पूर – कपूर

53. कूप – कुआँ

54. कर्कट – केकड़ा

55. पौष – पूस

56. पशु – पसु

57. पुरुष – पुरुख

58. पालित – पालतू

59. सूना ⟷ शून्य

60. शिला – सिल

61. अटल – अचल

62. वाणी – बानी

63. वाष्प – भाप

64. मर्कटी – मकड़ी

65. जृम्भिका – जँभाई

66. जामातृ – जमाई

67. यज्ञोपवीत – जनेऊ

68. जिह्वा – जीभ

69. कंकण – कंगन

70. कंकाल – ठठरी

71. कर्कर - कंकड़

72. त्रयोदश - तेरह

73. त्रीणि - तीन

78. त्रिंशत - तीस

79. त्रिविंशति - तेईस

80. श्वसुर - ससुर

81. सॉंवला - श्यामल

82. घृत - घी

83. धैर्य - धीरज

84. परिकूट - परकोटा

85. पिपासु - प्यासा

86. सप्तदश - सत्रह

87. ओष्ठ - होंठ

88. लवंग - लौंग

89. भिक्षा - भीख

90. तिक्त - ~~तीखा~~ तीता

91. तीक्ष्ण - तीखा

92. डोरक - डोरा

93. तार्कव - तागा

94. रज्जु - रस्सी

95. आलस्य - आलस

96. वानर - बंदर

97. कर्ण - कान

1. यमुना = कालिंदी, सूर्यसुता, रवितनया, भानुजा, अर्कजा
कमलापति → लक्ष्मी जी के पति → भगवान विष्णु
विष्णु = लक्ष्मीपति, नारायण, हरि, चतुर्भुज

2. 'छूट' = रियायत, कटौती, ढील, मुजरा, अवकाश

3. तलवार = खड्ग, कृपान, असि, करवाल, चन्द्रहास, शमशीर
नाराच ⟷ बाण, तीर, शर, इषु, सायक, आशुग

4. पार्वती = गौरी, उमा, गिरिजा, भवानी, अंबिका, शैलसुता, दुर्गा, शिवानी
मोहिनी = मनमोहक, आकर्षक, मायाविनी, सम्मोहिनी

5. अनुयायी = समर्थक, अनुगामी, भक्त, पैरवार, शिष्य
विख्यात → प्रसिद्ध, मशहूर, नामी, यशस्वी, ख्यातिप्राप्त
परम → श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, महान, मुख्य, उच्चतम, सर्वोत्तम
उपास्य → आराध्य, पूज्य, पूजनीय, अर्चनीय, उपासनीय

6. उल्लू = उलूक, कौशिक, घूघू, रात्रिचर, लक्ष्मीवाहन
उपेक्षा = अवहेलना, अनदेखी, अनादर, उदासीनता, तिरस्कार

7. अर्जुन = सव्यसाची, पार्थ, धनंजय, कौंतेय, गांडीवधर, गुडाकेश
मदन = कामदेव, मनोज, अनंग, कंदर्प, मार
गौरी = माता पार्वती
वैनतेय = गरुड़, उरगारि, खगपति, सुपर्ण

8. देय = ऋण, दातव्य, बकाया, प्रदेय
ताव = ताप, ऊष्मा, आँच, गुस्सा शेष, आवेश, जोश, शेखी
बीचि = लहर, तरंग, उमंग, हिलकोर, ऊर्मि

9. पसीना = स्वेद, प्रस्वेद, श्रमजल, श्रमवारि
पाखंड = ढोंग, आडंबर, दिखावा, छल, कपट, प्रपंच
पहेली = प्रहेलिका, रहस्य, बुझौवल, कूटप्रश्न
प्रस्तर = पत्थर, पाषाण, पाहन, उपल, अश्म, शिला

10. पापी = पामर, अधर्मी, पातकी, दुष्ट, कुकर्मी
पालन = परवरिश, पोषण, रक्षण, रक्षा
पादप = वृक्ष, तरू, पेड़, द्रुम, विटप
पागल = विक्षिप्त, उन्मत्त, मतिभ्रम

11. शिव = शंकर, आशुतोष, भोलेनाथ, महादेव, शंभू, नीलकंठ त्रिलोचन, चंद्रशेखर
नीरवता = निस्तब्धता, खामोशी, मौन, शांति
गहनता = गहराई, गंभीरता, गहरापन, जटिलता
शून्यता = खालीपन, रिक्ति, निर्जनता

12. ब्रह्मा = विरंची, चतुरानन, चतुर्मुख, विधाता, कमलासन, लोकेश, पितामह, अज, प्रजापति
बेशुमार = अनगिनत, असंख्या, अथाह
बोध = ज्ञान, समझ, एहसास, बुद्धि
विश्व = संसार, दुनिया, जगत, जग, जहान, ब्रह्मांड, लोक

13. अनुनय = विनय, विनती, प्रार्थना, निवेदन, अनुरोध, चिरौरी
बिजली = विद्युत, चपला, चंचला, सौदामिनी, दामिनी, तड़ित क्षणप्रभा
सिकता = बालू, रेत, रेती
बिछोह = वियोग, विरह, विच्छेद

14. अक्षि = आँख, नेत्र, नयन, चक्षु, लोचन, दृग
अश्व = घोड़ा, हय, घोटक, तुरंग, वाजि, सैंधव
अंक = संख्या, गिनती, चिह्न, गोद, छाप
क्रोड़ = गोद, वक्षस्थल (छाती)

15. नरक = यमलोक, यमपुर, दोजख, निरय
पाथोज = कमल, अंबुज, अंभोज, प
सुर = देव, देवता, अमर, अजर, निर्जर, वासव, स्वर, ध्वनि, नाद
स्वामी = नाथ, प्रभु, ईश, पति

16. मयंक = चंद्रमा, चाँद, शशि, शकेश, हिमांशु, सुधाकर
ज्योत्स्ना = चाँदनी, कौमुदी, चन्द्रिका, उजियारी
शिखर = चोटी, शीर्ष, कूट, श्रृंग, सिरा

17. केश = बाल, कच, कुंतल, चिकुर, अलक, रोम, शिरोरूह
मयूख = किरण, रश्मि, अंशु, प्रभा, दीप्ति, प्रकाश

18. कछुआ = कच्छप, कूर्म, कमठ, कश्यप
कपोत = कबूतर, पारावत, परेवा, हारीत, रक्तलोचन
कुबेर = धनद, धनपति, धनेश, यक्षराज, राजराज
कटाक्ष = व्यंग्य, तंज, ताना, आक्षेप

19. जंबुक = सियार, गीदड़, शृगाल
घोटक = घोड़ा, बाजी
खगेश = गरूड़, खगपति, नागांतक, सुपर्ण
कर्दम = कीचड़, कीच, चहला, पंक

20. श्यामा = कोकिल, कोकिला, पिक, यमुना, रात्रि
कंटक = काँटा, शूल, डंक
कल्पित = काल्पनिक, मनगढ़ंत, असत्य, झूठा
कलिका = कली, मुकुल, कोरक, गोपंल

21. मृदुल = कोमल, मुलायम, नरम, नाजुक, सुकुमार
अल्प = थोड़ा, कम, न्यून
हिंसक = क्रूर, उग्र, निर्दयी, कठोर, घातक
कृत्रिम = बनावटी, नकली, अवास्तविक

22. अधर = होंठ, ओष्ठ, दंतच्छद, लब
धरती = पृथ्वी, भूमि, धरा, जमीन, वसुधा, मही
आसमान = आकाश, गगन, नभ, अम्बर, व्योम
धर्म = मजहब, मत, पंथ, कर्तव्य

23. कुहा = कुहासा, धुंध, नीहार, कुहरा
किरण = रश्मि, अंशु
कच = बाल, केश
केला = कदली, रंभा, भानुफल, मोचा, गजवसा

24. अनुपम = अद्वितीय, अतुलनीय, अद्भुत, निरुपम
अनुरूप = अनुकूल, उपयुक्त, समान, सदृश
इच्छा = कामना, अभिलाषा, चाह, लालसा
भानु = सूर्य, रवि, सूरज, दिनकर, दिवाकर, भास्कर, आदि

25. इंद्राणी = शची, पौलोमी, पुलोमजा, ऐंद्री, महेन्द्री
अनुग्रह = कृपा, दया, अनुकंपा
रुचि = अभिरुचि, दिलचस्पी, इच्छा

26. अवज्ञा = अनादर, अवहेलना, उपेक्षा
विचित्र = अनोखा, अजीब, अद्भुत, विलक्षण

27. अर्जुन = धनंजय
अजय = अपराजित, अपराजेय
विजय = जय, जीत, फतह, सफलता
पराजय = हार

28. कमल = पंकज, जलज, सरोज, राजीव, अंबुज, नीरज, अंशविंद, नलिन
वासुदेव = कृष्ण, विष्णु, माधव
संजीव = जीवित, सजीव, चेतन, प्राणवान
नदी = सरिता, तटिनी, तरंगिणी, निर्झरिणी, आपगा

29. उपालंभ = उलाहना, शिकायत, शिकवा
नीला = आसमानी, नीलवर्ण
आशंका = संदेह, शक, डर, भय
निकेतन = घर, भवन, आलय, निवास, सदन, आवास, निलय

30. तालाब = पुष्कर, सरोवर, जलाशय, तड़ाग, पोखरा, सर
नदीश = समुद्र, सागर, जलधि, सिंधु, रत्नाकर

31. आरंभ = सूत्रपात, प्रारंभ, शुरुआत, श्रीगणेश, आगाज़
अहाता = बाड़ा, घेरा, परकोटा, चारदीवारी, हाता
पशोपश = दुविधा, उलझन, अनिर्णय
अगम = दुर्गम, अगम्य, अथाह, गहन, विकट

32. कामधेनु = सुरभि, सुरधेनु, कामदुक, शबला, कपिला, गौमाता
पटकथा = फिल्मी नाटक, चलचित्र

33. अग्राह्य = अनुपयुक्त, अनुचित, अमान्य
व्योम = नभ, गगन, अंबर, आसमान
आमोद = प्रसन्नता, आनंद, सुगंध
आशीष = आशीर्वाद, दुआ, शुभकामना, आशीर्वचन

34. सोना = स्वर्ण, कनक, कंचन, सुवर्ण, हेम, कुंदन, हाटक, हिरण्य
विभूति = ऐश्वर्य, वैभव, संपदा, संपत्ति, विभव, भस्म, राख
मृषा = झूठ, असत्य, अनृत

35. मंगनी = सगाई, वाग्दान, फलदान
रघुवर = राम, राघव, रघुपति, रघुनाथ, सीतापति

36. लक्ष्मण = लखन, सौमित्र, रामानुज, सुमित्रानंदन, शेष
दनुज = असुर, दैत्य, दानव, राक्षस, निशाचर
पामर = अधम, नीच, खल, दुर्जन, पापी
शुकप्रिय = सिरिस का पेड़, कमरख

37. मछली = मीन, मत्स्य, शफरी, झष, जलजीवन, झख

38. हलाहल = विष, जहर, गरल, कालकूट, महाविष, काकोल
अंतक = यमराज, काल, मृत्यु, धर्मराज
मदिरा = सुरा, मद्य, हाला, आसव, मद्यु, शराब
मिष्ठान = मिठाई, पकवान

39. मनीषी = विचारक, पंडित, विद्वान, ज्ञानी, प्रज्ञावान
राजा = नृप, भूप, नृपति, नरेश, नरेन्द्र, महीप, महिपाल

40. वज्र = कुलिश, पवि, अशनि, इंद्रायुध, शतकोटि
कालकूट = विष
वृष्टि = वर्षा, बारिश, पावस, मेह
कैवल्य = मोक्ष, मुक्ति, अपवर्ग

41. कामदेव = मदन, मनोज, कंदर्प, अनंग, मनसिज, मार, रतिपति
आयुष्मान = चिरंजीवी, दीर्घजीवी, चिरायु, दीर्घायु, चिरंजीव, शतायु
कर्कश = कठोर, कड़ोर, तीखा, तेज, खुरदरा
भक्ष्य = खाद्य, भोज्य, अशनीय, आहार्य

42. अंबु = जल, नीर, वारि, तोय, पानी
आग = अग्नि, अनल, पावक, दहन, कृशानु, हुताशन
नितिन = नियम, सदाचार, नैतिकता

43. इच्छा = अभिलाषा, कामना, चाह, लालसा, आकांक्षा
प्रमोद = आनंद, हर्ष, उल्लास, आमोद

44. शिलीमुख = भ्रमर, भँवरा, मधुप, अलि, तीर, बाण, विशिख, नाराच
पंचमुख = शेर, सिंह, केसरी, वनराज, शिव, शंभू, महेश्वर, शार्दुल, मृगेंद्र, नाहर, बाघ, व्याघ्र

45. मैना = साहिका, सारी, शालिका, मदनशलाका, मधुरालापा, कलहप्रिया, चित्रलोचना
संचेतना = जागरूकता, बोध, ज्ञान, अनुभूति

46. लब्ध = प्राप्त, उपलब्ध, गृहीत
प्राज्ञ = विद्वान, ज्ञानी, पंडित

47. अंधकार = अँधेरा, तिमिर, तमस, तम, ध्वान्त
उजाला = प्रकाश, रोशनी, आलोक, ज्योति, प्रभा
रात्रि = रात, निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी

48. धवल = सफेद, श्वेत, उजला
एकत्व = एकता, एका, मेल
चमू = सेना, फ़ौज, कटक, दल, वाहिनी, अनीक

49. नरेश = राजा, भूप, भूपति
नीरद = मेघ, जलधर, वारिद, बादल, पयोधर, अंबुद

50. कुसुमाकर = ऋतुपति, वंसत, मधुमास, बहार, फुलवारी
हेमंत = शीतकाल, शिशिर, सर्दी

51. हिम = बर्फ, तुषार, तुहिन, नीहार, प्रालेय, पाला
सुरभि = सुगंध, गाय

52. नदी = आपगा, कूलकंषा, निम्नगा
उर्वी = पृथ्वी, धरा, धरती, भूमि, वसुधा, वसुंधरा

53. राशी = पुंज, ढेर, समूह, अंबार, धन, नक्षत्र, तारा

54. विक्षुब्ध = आकुल, क्षुब्ध, व्याकुल, अशांत, विह्वल,
पुरीष = मल, विष्ठा, शमल
विहंग = पक्षी, खग, पंछी, पखेरू, नभचर

55. बिजली = विद्युत, चपला, चंचला, तड़ित, सौदामिनी, दामिनी
नाराच = तीर, बाण, इषु, विशिख
अद्रि = पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, अचल, नग, भूधर

56. छाप = निशान, मुहर, अक्स, चिह्न
साया = छाया, परछाई, छाँह, प्रतिबिंब, आश्रय
आच्छादन = आवरण, ढकना, छाजन

57. सर्प = पन्नग, व्याल, उरग, साँप, भुजंग, नाग
हाटक = सोना, स्वर्ण

58. तलवार = असि, कृपाण, करवाल, खड्ग, शमशीर, चंद्रहास
संतप्त = दुख, कष्ट, व्यथा, क्लेश, पीड़ा, दाह
भीति = दीवार, भीत
प्रभंजन = आँधी, महावात

59. इला = पृथ्वी, सरस्वती, पार्वती, वाणी

60. निशाचर = राक्षस, असुर, दैत्य, दानव

61. गिरीश = महादेव, शिव, हिमालय
हिमांशु = चाँद, चन्द्र, मयंक, राकेश, सुधांशु, विधु

62. ब्रह्मा = स्वयंभू, विरंचि, लोकेश, चतुरानन, विधाता

63. समुद्र = सागर, सिंधु, जलधि, रत्नाकार, पयोधि
जलज = कमल, पंकज, नीरज, सरोज, अंबुज, वारिज
तड़ाग = तालाब, सरोवर, जलाशय, सर, ताल, पुष्कर

64. शत्रु = दुश्मन, वैरी, रिपु, अरि, अराति, अमित्र
मित्र = साथी, दोस्त, संगी
कुंदन = स्वर्ण, कंचन, हेम, तपनीय, महारजत

65. गणेश = विनायक, गजवदन, लंबोदर, एकदंत, गजानन
पंचशर = कामदेव, मदन, मनोज

66. कपड़ा = वस्त्र, वसन, पट, चीर, परिधान
कपोत = कबूतर, पाशवत, परेवा

67. देवता = सुर, देव, अमर, निर्जर, विबुध, वसु
दास = सेवक, चाकर, अनुचर, भृत्य

68. मेघ = अंबुद, घन, जलद, वारिद, नीरद
नीरधि = समुद्र, सागर, जलधि, वारिधि, रत्नाकर, पयोनिधि, पयोधि

69. महादेव = त्रिलोचन, नीलकंठ
देवेश = इन्द्र, ईश्वर, शक्र, सुरेन्द्र, देवेन्द्र, वज्रधर, शचीपति

70. ब्रह्मा = विधाता, विधि
विष्णु = हरि, नारायण, माधव, केशव, जनार्दन, चक्रपाणी

71. उद्दंड = अशिष्ट, असभ्य, ढीठ, बेअदब, गुस्ताख, उद्धत, असभ्य
उम्दा = उत्तम, श्रेष्ठ, सुंदर

72. चोर = मोषक, अर्चि, कुम्भिल, दस्यु, रजनीकर
खनक = ध्वनि, आवाज

73. स्त्री = सुंदरी, कामिनी, वामा, कांता, वनिता, रमणी
सविता = सूर्य, रवि

74. अमृत = सुधा, पीयूष, सोम, अमिय, अमी, मधु, सुरभोग
कृशानु = अग्नि, आग, अनल

75. वृष्टि = वर्षा, पावस, मेह
प्रकृति = कुदरत, सृष्टि, निसर्ग, स्वभाव
धूप = घाम, आतप, सूर्यप्रकाश, रविप्रभा, ताप
ओला = उपल, अश्म, अश्मा, इंद्रोपल, बनौरी

76. सोना = कंचन, स्वर्ण, कनक, हेम, कुंदन
व्याल = साँप, सर्प, नाग, पन्नग

77. सिंह = केहरी, शेर, मृगेंद्र, केसरी
मृगांक = चंद्रमा, मयंक, हिमांशु, सुधांशु
विहग = पक्षी, द्विज, नभचर
दामोदर = कृष्ण, विष्णु

78. तालाब = पद्माकर, पोखरा, तड़ाग
नीरज = कमल, पंकज, सरोज
किंकर = दास, सेवक, अनुचर

79. पारिजात = हरसिंगार, शेफालिका, प्राजक्ता, कल्पवृक्ष

80. मवेशी = पशु, ढोर, चौपाया, चतुष्पद
घास = तृण, चारा, दूब, शाद, कुशा
मधुमक्खी = मक्षिका, क्षुद्रा, सरघा
मांस = आमिष, गोश्त, पिशित, मिष

81. चोर = रजनीकर
गर्दभ = गधा, रासभ, खर, वैशाखनंदन.
सारंग = मोर, हिरण, हाथी

82. द्रव्य = धन, सम्पत्ति, वित्त, दौलत, पदार्थ

83. घर = गृह, निकेतन, आलय, निवास
ग्रह = खगोलिय पिंड, नक्षत्र

84. प्रहरी = पहरेदार, संतरी, दरबान
संहारक = अंतक, संहर्ता

85. कूल = किनारा
प्रभा = प्रकाश, चमक, दीप्ति, आभा
पट = वस्त्र, पर्दा, द्वार, दरवाज़ा
विहार = सैर, भ्रमण, क्रीड़ा

86. विचक्षण = चतुर, बुद्धिमान, विद्वान

87. उद्यत = तत्पर, तैयार, प्रस्तुत, आमदा, सन्नद्ध

88. चंद्र = सारंग
अब्धि = समुद्र, पयोधि
सूर्यतनया = यमुना नदी, कालिंदी, अर्कजा, तरणिजा
रुचिर = मनोहर, चारु, रम्य, ललित

89. मनीषी = विद्वान, ज्ञानी
मघवा = इंद्र, सुरपति, पुरंदर
कौशिक = इंद्र, उल्लू, विश्वामित्र

90. कर्मठ = परिश्रमी, कर्मशील, कर्मनिष्ठ, उद्योगशील, उद्यमी
अशक्त = कमजोर, दुर्बल, निर्बल
प्रवंचना = धोखा, छल, ठगी, धूर्तता, कपट
अंगराज = कर्ण, राधेय, सूतपुत्र, कौन्तेय

91. शपथ = प्रतिज्ञा
योग्य = कुशल, सक्षम, काबिल, कार्यक्षम

92. बटोही = पथिक, राही, राहगीर, पंथी, बटाऊ
पाथेय = पथ्य-भोजन, कलेवा, जलपान

93. नारद = देवर्षि, ब्रह्मर्षि, पिशुन

94. उत्ताल = ऊँचा, उत्तुंग, उन्नत, प्रखर, तीव्र, विशाल

96. अश्व = घोड़ा, हय, तुरंगा, घोटक
जंगल = वन, अरण्य, कानन, विपिन, कांतार

97. स्कन्द = कार्तिकेय, षडानन, कुमार, गुहा, महासेन
अधिपति = स्वामी, मालिक, राजा, प्रभु, नृपराज
धनेष = कुबेर, धनपति, यक्षराज, धनद

98. सैंधव = घोड़ा

99. पीयूष = अमृत, अमिय, सुधा, अमी

100. गरल = विष, जहर, हलाहल
उदक = जल, पानी, नीर, वारि, सलिल

101. धनुष = चाप, शरासन, कमान, कोदंड, पिनाक, कार्मुख

102. गंगा = देवापगा, भागीरथी, मंदाकिनी, देवनदी, सुरसरिता, विष्णुपदी, ध्रुवनंदा, अलकनंदा

103. कमल = पंकज, नीरज, जलज, सरोज, अरविंद, पद्म, नलिन

104. अदक्ष = अकुशल, अनाड़ी, अनभिज्ञ

105. मंतव्य = अभिप्राय, मत, मंशा

106. वायु = पवन, हवा, समीर, अनिल, मारुत, वात

107. अवधूत = संन्यासी, योगी, विरक्त, त्यागी, साधु

108. प्रणेता = रचयिता, ग्रंथकार, प्रवर्तक, निर्माता, संस्थापक

109. आवेग = वेग, जोश, उत्तेजना, तेजी, स्फूर्ति

110. अमर = अनश्वर, अविनाशी, शाश्वत, नित्य, चिरंजीवी

पर्यायवाची शब्द

Part 2

1. पूर्णिमा :- पूनम, पौर्णमासी, शका, चांद्री
2. अमावस्या :- अमा, अमावस, कुहू, दर्श, मावस, मासांत, सिनीवाली
3. राक्षस :- निशाचर, असुर, दैत्य, दानव
4. लक्ष्मण :- लखन, सौमित्र, शमानुज, शेष, शेषनाग
5. उन्नति :- प्रगति, विकास, तरक्की, उत्कर्ष
6. तारा :- सितारा, नक्षत्र, तारक, तारिका, नखत, उडु
7. मछली :- मीन, मत्स्य, शफरी, झष
8. गोद :- अंक, क्रोड़, उत्संग, गोदी
9. छाप :- निशान, चिन्ह, ठप्पा, प्रभाव
10. अंग :- अवयव, अंश, हिस्सा, भाग, टुकड़ा, खण्ड
11. आकाश :- आसमान, गगन, नभ, व्योम, अम्बर, अनंत, अभ्र
12. भूमिजा :- सीता, जानकी, वैदेही, भूसुता, उर्वीजा
13. प्रमोद :- आनंद, हर्ष, प्रसन्नता, आमोद
14. घोड़ा :- घोटक, अश्व, तुरंग, बाजी, हय, सैंधव
15. रोष :- क्रोध, आक्रोश, अमर्ष, रिस, गुस्सा, कोप
16. दुख :- पीड़ा, वेदना, कष्ट, तकलीफ, दर्द, कसक, यातना
17. धूप :- आतप, घाम, रविप्रभा, निदाघ, सूर्यातप
18. घर :- आलय, आवास, गृह, निकेतन, निलय, सदन
19. चित्र :- दृश्य, आकृति, रूप, छायाचित्र
20. यमुना :- कालिंदी, सूर्यसुता, रवितनया, भानुजा, अर्कजा

21. नदी = आपगा, सरिता, तटिनी, तरंगिणी, निर्झरिणी
22. बिजली = सौदामिनी, क्षणप्रभा, दामिनी, चपला, तड़ित, विद्युत, चंचला, इंद्रवज्र, घनप्रिया
23. पुत्री = बेटी, सुता, आत्मजा, तनया, दुहिता
24. पुत्र = बेटा, सुत, आत्मज, तनय, तनुज, नंदन, वत्स
25. शीघ्र = जल्दी, तुरंत, तेज, अविलंब, द्रुत
26. सफ़ेद = श्वेत, धवल, उजला, उज्जवल
27. विपक्षी = विरोधी, प्रतिद्वंद्वी, प्रतिपक्ष, दुश्मन, शत्रु
28. व्यभिचारिणी = परपुरुषगामिनी, असती, कुलटा
29. शक्तिशाली = बलवान, प्रबल, शक्तिमान, ओजस्वी, पराक्रमी
30. निरर्थक = बेकार, व्यर्थ, अर्थहीन, अर्थशून्य
31. चंदन = मलयज, गंधराज, श्रीखंड, गंधसार, संदल, दारूसार, भद्रश्री
32. पर्वत = पहाड़, भूधर, शैल, अचल, गिरि, नग, महीधर
33. सोना = स्वर्ण, हाटक, कनक, कंचन, हेम, जातरूप
34. अंकुर = कोंपल, अँखुआ, कल्ला, किसलय, पल्लव, प्ररोह
35. संख्या = गिनती, अंक, तादाद, क्रमांक, राशि

विलोम शब्द

1. सृष्टि :- प्रलय
2. उत्पत्ति :- विनाश
3. उतार :- चढ़ाव
4. जंगम :- स्थावर
5. पर्णकुटी :- प्रासाद
6. उत्तरी :- दक्षिणी
7. विधि :- निषेध
8. उदय = अस्त
9. पक्षपात = निष्पक्षता
10. सुलभ = दुर्लभ
11. सुयश = अपयश
12. सृजन = संहार
13. सूक्ष्म = स्थूल
14. साधारण = विशेष
15. सम्मानित = अपमानित
16. अनुलोम = प्रतिलोम
17. धृष्ट = विनम्र
18. अभिज्ञता = अनभिज्ञता
19. स्फूर्ति = शिथिलता
20. आदर्श = यथार्थ
21. उदार = अनुदार
22. पतनोन्मुख = विकासोन्मुख
23. श्रुत = अश्रुत
24. अधिकृत = अनधिकृत
25. क्षमा = दंड
26. रक्षक = भक्षक
27. पतझड़ = वसंत
28. अंगीकार = बहिष्कार
29. व्यभिचारी = सदाचारी
30. क्रिया = प्रतिक्रिया / निष्क्रियता
31. उत्तम = अधम
32. अमर = मर्त्य / नश्वर
33. ऐश्वर्य = अनैश्वर्य
34. सामिष = निरामिष
35. विनय = अहंकार / घमंड
36. प्राचीन = अर्वाचीन
37. बर्बर = सभ्य
38. प्रेरित = अप्रेरित
39. सुडौल = बेडौल
40. सुधा = विष / गरल
41. सुफल = कुफल / निष्फल
42. उपकार = अपकार
43. तम = प्रकाश
44. प्रखर = मंद
45. कृत = अकृत
46. गगन = पृथ्वी / धरती
47. कोप = कृपा
48. चिरंतन = नश्वर

49. चंचल = स्थिर / एकाग्र
50. चुस्त = सुस्त
51. जड़ = चेतन
52. उत्कर्ष = अपकर्ष
53. काल = अकाल
54. घली = निश्घली
55. खंडन = मंडन
56. चैन = बेचैन
57. गहरा = उथल / छिछला
58. पुष्ट = क्षीण / अपुष्ट
59. वृद्ध = युवा / तरुण
60. आघात = प्रतिघात
61. अवनत = उन्नत
62. शाश्वत = नश्वर / क्षणिक
63. प्रकृत = कृत्रिम
64. जननी = जनक
65. घोषित = अघोषित
66. धाँह = धूप
67. सृजन = विनाश
68. साक्रिय = निष्क्रिय
69. परलोक = इहलोक
70. स्तुति = निंदा / तिरस्कार
71. आविर्भाव = तिरोभाव
72. सज्जन = दुर्जन
73. स्थूल = सूक्ष्म
74. आर्द्र = शुष्क
75. नवीनता = प्राचीनता / पुरातनता
76. आवृत = अनावृत
77. एकत्र = विकीर्ण
78. जाति = विजाति
79. ग्राम्य = नागर / शहरी
80. कर्ता = अकर्ता
81. कसा = ढीला
82. कल्पनीय = कल्पनातीत
83. ग्रस्त = मुक्त
84. मुक्तहस्त = कंजूस
85. दिवा = रात्रि / निशा
86. परितोष = दंड
87. तटस्थ = पक्षपाती
88. मौलिक = अनूदित
89. दीर्घ = लघु
90. कटु = मधु
91. परार्थ = स्वार्थ
92. पतन = उत्थान
93. निर्भरता = आत्मनिर्भरता
94. दाता = सूम
95. निंदा = स्तुति
96. दुराचारी = सदाचारी
97. क्षणिक = शाश्वत
98. आहार्य = अनाहार्य
99. उत्तरायण = दक्षिणायन
100. उग्र = सौम्य
101. निराकार = साकार

103. तृष्णा = वितृष्णा
104. व्यस्त = निष्क्रिय
105. हर्ष = विषाद
106. जागरण = निद्रा
107. पौ = गोधूलि
108. संकीर्ण = विस्तीर्ण
109. अलभ्य = लभ्य
110. अतिवृष्टि = अनावृष्टि
111. आकुंचन = प्रसारण
112. परजीवी = स्ववलंबी
113. व्यय = आय
114. अनुद्धत = उद्धत
115. स्थावर = जंगम
116. प्रजातंत्र = राजतंत्र
117. विस्तृत = संक्षिप्त
118. नर्म = कठोर
119. एकाग्रचित = अन्यमनस्क
120. अनुग्रह = विग्रह
121. इष्ट = अनिष्ट
122. भूषण = दूषण
123. कृतज्ञ = कृतघ्न
124. कोप = कृपा / दया
125. गत = आगत
126. आभ्यन्तर = बाह्य
127. ज्योति = तम
128. नश्वर = अमर
129. सुषुप्ति :- जागरण / जागृति
130. अंत :- आदि
131. उन्मूलन = रोपण
132. आधुनिक = प्राचीन
133. भीषण = सौम्य
134. अनुरक्त = विरक्त
135. तरल = ठोस
136. दुर्दान्त = शांत
137. सचेष्ट = निश्चेष्ट
138. घृणा = प्रेम
139. अवलम्ब = निरालम्ब
140. कंठस्थ = विस्मरण
141. ऋजु = वक्र
142. स्तुत्य = हेय / निंद्य
143. भिन्न = समान
144. लाभ = हानि
145. सीधा = उल्टा
146. पाप = पुण्य
147. उत्थान = पतन
148. विपदा = सम्पदा
149. प्रलय = सृष्टि
150. अभिसरण = अपसरण
151. औरोहण = अवरोहण
152. अधिकृत = अनाधिकृत
153. संधि = विग्रह

154. कठोर = कोमल
155. दमन = उत्प्रेरणा
156. तरंगित = शांत
157. गृही = त्यागी
158. अवनि = अंबर
159. अग्रगामी = पश्चगामी
160. विसर्जन = आवाहन
161. आर्द्र = शुष्क (सूखा)
162. अगाड़ी = पिछाड़ी
163. अवरोह = आरोह
164. दुर्निवार = निवार्य
165. अथाह = उथला
166. सद्भाव = दुर्भाव
167. सुवृत्ति = कुवृत्ति

मुहावरे & लोकोक्तियाँ

1. गागर में सागर भरना :- थोड़े शब्दों में बहुत अधिक कहना
2. भाग खड़ा होना :- अचानक भाग जाना, डरकर भाग जाना
3. खून पसीना एक करना :- कठिन परिश्रम करना / मेहनत करना
4. बारह बजाना :- घबरा जाना, भयभीत होना
5. अठखेलियाँ सूझना :- मस्ती करना / चंचलता भरी हरकतें सूझना
6. अपना उल्लू सीधा करना :- अपना काम निकालना / स्वार्थ साधना
7. बीच बाजार में कपड़े उतरवाना :- बहुत बेइज्जत करना
8. अँगूठा दिखाना :- समय पर धोखा देना
9. आँखो में धूल झोंकना :- धोखा देना / गुमराह करना
10. काग़ज की नाव :- क्षणिक और अस्थायी वस्तु
11. ठीकरा फोड़ना :- किसी पर झूठा आरोप लगाना / इल्ज़ाम लगाना
12. करम फूटना :- भाग्य का साथ न देना / बुरे दिन आना
13. रंग में भंग डालना :- आनंद, खुशी में बाधा डालना
14. अपना राग अलापना :- अपनी ही बात (तारीफ) करते रहना
15. अगर मगर करना :- टालमटोल करना / बहाने करना
16. अन्न जल उठना :- किसी स्थान को खाली करना / जीविका का साधन खत्म होना
17. अंक भरना :- गले लगाना / स्नेह से लिपटा लेना
18. लाल पीला होना :- बहुत क्रोधित होना
19. करवटें बदलना :- बेचैन होना / नींद न आना / चिंतित होना
20. खून सफेद हो जाना :- दया या ममता खत्म हो जाना
21. जहर की घूंट पीना :- अपमानजनक बातें चुपचाप सहन करना
22. नाव में धूल उड़ाना :- व्यर्थ बदनाम करना, बिना सिर-पैर की बात करना, झूठ बोलना

23. आस्तीन का साँप :- कपटी या विश्वासघाती मित्र
24. नौ दो ग्यारह होना :- भाग जाना / गायब हो जाना
25. पानी-पानी होना :- बहुत शर्मिंदा होना / लज्जित होना
26. अपनी खिचड़ी अलग पकाना :- सबसे अलग-थलग रहना
27. मुँह पर कालिख पोतना :- कंलक लगाना / बदनामी करना
28. आँखे दिखाना :- गुस्से से देखना, डराना, धमकी देना
29. दाँत काटी रोटी होना :- गहरी दोस्ती / अत्यंत घनिष्ठ मित्रता
30. अपना सा मुँह ले कर रह जाना :- लज्जित होना / शर्मिंदा होना
31. अंधेरी नगरी :- हर ओर धाँधली होना / कोई नियम लागू न होना
32. डंडे की चोट पर कहना :- खुलेआम, निर्भीकता और आत्मविश्वास से अपनी बात कहना
33. दुर-दुर करना :- नफ़रत के साथ दूर करना / अपमासहित दूर करना
34. गुड़ गोबर कर देना :- बना-बनाया काम बिगाड़ देना
35. हाथ पाँव फूलना :- घबरा जाना / भयभीत होना
36. अपनी इज्जत अपने हाथ होना :- मनुष्य की प्रतिष्ठा, मान-सम्मान स्वयं उसी के हाथ (व्यवहार) में होती है।
37. दूध का दूध पानी का पानी करना :- सच्चाई सामने लाना / उचित न्याय करना
38. चोटी का पसीना एड़ी तक आना :- कठिन मेहनत करना
39. घर बसाना :- विवाह करना
40. छूमंतर होना :- गायब हो जाना
41. गहरी नींद सोना :- घोड़े बेचकर सोना
42. आँख का अंधा नाम नयनसुख :- नाम के विपरी गुण होना
43. जबरदस्ती का ठेंगा सिर पर :- शक्तशाली व्यक्ति या सत्ता वाले के दबाव में काम करना

44. साधारण वस्तु की सुरक्षा के लिए अधिक खर्च करना :- अरहर की दट्टी, गुजराती ताला

45. गुड़ खाए गुलगुले से परहेज :- मिलने-जुलते कामों में से एक को करना और दूसरे से बचना / ढोंग करना

46. आधा तीतर आधा बटेर :- बेमेल - बेढंगा

47. आवाँ का आवाँ बिगड़ना :- पूरे परिवार, वंश का किसी बुराई में समान रूप से लिप्त होना

48. काल का मारा सब जग हारा :- मृत्यु या भाग्य की बुरी मार से कोई नहीं बच सकता

49. अपनी - अपनी ढपली, अपना - अपना राग :- सबका अलग-अलग मत होना / समझौता परस्त होना

50. समरथ को नहीं दोष गुसाईं :- सामर्थ्यवान / शक्तिशाली व्यक्ति की सभी गलतियाँ नजरअंदाज होती हैं।

51. काम का न काज का दुश्मन अनाज का :- काम के लिए निकम्मा भोजन के लिए तैयार

52. जबान को लगाम चाहिए :- सोच-समझकर बोलना चाहिए

53. कौआ चला हंस की चाल :- औकात से अधिक दिखावा करना

54. ठंडा लोहा गरम लोहे को काट देता है :- शांत व्यक्ति क्रोधित व्यक्ति पर भारी पड़ता है

55. कोयल होय न उजली सौ मन साबुन लाइ :- मनुष्य या वस्तु का मूल स्वभाव नहीं बदलता

56. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली :- बेमेल तुलना होना

57. अंधों में काना राजा :- मूर्खों में कुछ पढ़ा-लिखा व्यक्ति

58. छोटा मुँह बड़ी बात :- अपनी योग्यता से बढ़कर बात करना

59. घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध :- घर मे कोई महत्व नहीं, बाहर पूज्य

60. दाल मे काला होना :- संदेह का अनुभव होना

61. थका ऊँट सराय ताकता :- परिश्रम के बाद आराम का इंतजार

62. आगे नाथ न पीछे पगहा :- बंधन मुक्त

63. एक तो करेला, ऊपर से नीम चढ़ा :- एक से ज्यादा दोष होना

64. घर-घर शादी, घर-घर गम :- कभी खुशी कभी गम होना

65. आगे कुंआ, पीछे खाई :- हर तरफ मुसीबत

66. अधजल गगरी छलकत जाय :- ज्ञान कम, दिखावा ज्यादा

67. काम को और खाने को और :- परिश्रम कोई और करे लाभ किसी और को मिले

68. खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे :- असफलता से लज्जित होकर क्रोध करना

69. गुदड़ी का लाल :- गरीब परिवार मे जन्मा गुणी व्यक्ति

70. गंगा गए गंगादास यमुना गए यमुनादास :- अवसरवादी होना

71. झोपड़ी में रहें, महलों के ख्वाब देखें :- अपनी सामर्थ्य से बढ़कर चाहना

72. किसी का घर जले कोई तापे :- दूसरों के नुकसान में अपना फायदा उठाना

73. घर का भेदी लंका ढाए :- घर का व्यक्ति ही विश्वासघात करे

74. आँख की किरकिरी होना :- अप्रिय लगना / पंसद न आना

75. ईमान की बात कहना :- सच-सच कहना / न्याय की बात

76. काठ का उल्लू :- बिल्कुल मूर्ख होना

77. कूप मंडूक :- सीमित ज्ञान / सीमित अनुभव होना

78. हथियार डाल देना :- हार मान लेना

79. गड़े मुर्दे उखाड़ना :- पुरानी बातों को कुरेदना
80. अक्ल के घोड़े दौड़ाना :- बहुत अधिक सोच - विचार करना
81. छप्पर फाड़ कर देना :- अचानक बहुत अधिक लाभ होना
82. जी का जंजाल :- व्यर्थ का झंझट
83. जी खट्टा होना :- खराब अनुभव होना
84. ओठ सूखना :- भयभीत होना
85. अंतर के पट खोलना :- विवेक से काम लेना
86. अगले जमाने का आदमी :- ईमानदार, सीधा - सादा व्यक्ति
87. निन्यानबे का फेर :- धन जोड़ने के लालच में पड़ना
88. चींटी के पर लगना :- विनाश या मृत्यु निकट आना / घमंड करना
89. खरी - खरी सुनाना :- स्पष्ट कहना
90. आँखों पर चर्बी चढ़ना :- घमंडी या अहंकारी होना
91. आँखों का पानी सूख जाना :- निर्लज्ज या बेशर्म हो जाना
92. कच्ची गोली खेलना :- अनुभवहीन होना
93. आखों में गड़ना :- बुरा लगना, खटकना
94. अंग - अंग खिल उठना :- अत्यधिक प्रसन्न होना
95. शीन काफ़ दुरुस्त न होना :- भाषा का सही ज्ञान न होना
96. कान पकड़ना :- गलती स्वीकार करना
97. अक्ल चरने जाना :- बुद्धि भ्रष्ट होना
98. झाड़ू फेरना :- नष्ट करना / बर्बाद करना
99. रास्ता नापना :- चले जाना / निकल जाना
100. कोल्हू का बैल :- कठिन परिश्रम करना

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ Part 2

101. अगर मगर करना :- टालमटोल करना
102. घर बसाना :- विवाह करना
103. कानों कान खबर न होना :- पूरी तरह से अनजान रहना
104. कान कतरना :- बहुत अधिक चालाक होना
105. कान भरना :- किसी के विरुद्ध शिकायत करना
106. कान का कच्चा :- बिना सोचे समझे विश्वास कर लेना
107. सिर धुनना :- बहुत पछताना / शोक मनाना
108. दूर की कौड़ी लाना :- बहुत दूर की सोच लेना
109. तख्ता उलटना :- सरकार बदलना / बना काम बिगड़ना
110. तारे गिनना :- नींद न आना
111. दिल भर आना :- आँखों में आँसू आ जाना
112. गीदड़ भभकी :- कोरी धमकी / झूठी धमकी देना
113. कमर टूटना :- निराश होना / हिम्मत टूट जाना
114. कहर टूटना :- भारी विपत्ति पड़ना
115. हवा हो जाना :- भाग जाना / गायब हो जाना
116. तलवे धो कर पीना :- चापलूसी करना
117. भागते भूत की लँगोटी ही सही :- कुछ न मिलने की स्थिति में जो थोड़ा - बहुत मिल जाए, उसी में संतोष कर लेना चाहिए
118. अंधेर नगरी चौपट राजा :- अन्याय का बोलबाला
119. यथा नाम तथा गुण :- नाम के अनुरूप स्वभाव होना
120. काला अक्षर भैंस बराबर :- पढ़ा - लिखा न होना
121. चट मँगनी पट ब्याह :- तत्काल कार्य होना
123. आँख सुख कलेजे ठंडक :- परम शांति
124. आम के आम गुठलियों के दाम :- दोहरा लाभ होना
125. एक हाथ से ताली नहीं बजती :- झगड़े में दोनो पक्षों की गलती होती है

126. बाप से बैर, पूत से सगाई :- पिता से दुश्मनी, पुत्र से लगाव
127. अपनी करनी पार उतरनी :- अपने किए का फल भोगना
128. आँख के अंधे गाँठ के पूरे :- मूर्ख परंतु धनवान
129. काटो तो खून नहीं :- अत्यधिक भयभीत होना
130. खग जाने खगही की भाषा :- पेशे वाला ही पेशे की बात समझता है
131. खोदा पहाड़ निकली चुहिया :- कठिन परिश्रम परन्तु थोड़ा लाभ
132. कभी के दिन बड़े कभी की रात :- समय कभी एक जैसा नही रहता
133. भूखे भजन न होय गोपाल :- भूख लगी हो तो कोई काम नही होता
134. अपनी गरज बावली :- स्वार्थी आदमी दूसरों की चिंता नहीं करता
135. एक पंथ दो काज :- एक ही प्रयास में दो लाभ / कार्य होना
136. कहीं की ईट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा :- बेमेल चीजों को इकट्ठा करना / अलग-अलग सामग्री से बेडौल रचना करना
137. उलटा चोर कोतवाल को डाँटे :- गलती अपनी और धमकाना दूसरों को
138. अपनी नींद सोना, अपनी नींद जागना :- पूर्ण स्वतंत्र होना
139. नाच न जाने आँगन टेढ़ा :- काम न जानना और बहाना बनाना
140. कब्र में पाँव लटकाना :- मौत के समीप होना / बहुत बूढ़ा हो जाना
141. मान न मान मैं तेरा मेहमान :- जबरमस्ती का मेहमान
142. अपनी करनी पार उतरनी :- अपने किए का भल भोगना
143. खेल खिलाड़ी का, पैसा मदारी का :- मेहनत कोई करे, लाभ कोई और उठाए
144. दूध का दूध, पानी का पानी :- निष्पक्ष न्याय
145. पहले तोलो, पीछे बोलो :- सोच समझकर बोलना चाहिए
146. इधर कुआँ, उधर खाई :- हर हालत में मुसीबत
147. जो करेगा सो भरेगा :- जैसे कर्म, वैसा फल
148. ईद का चाँद :- बहुत दिनों बाद दिखाई देने वाला व्यक्ति
149. धन्ना सेठ के नाती बने हैं :- अपने को अमीर समझना
150. अंधा बगुला कीचड़ खाए :- अभागा सुख से वंचित रह जाता है

151. उजला मुँह होना :- इज्जत या प्रतिष्ठा मिलना
152. उलटे पाँव लौटना :- निराश होकर वापिस आना
153. छाँह न छूने देना :- पास न आने देना
154. आटा दाल का भाव मालूम होना :- कठिनाई में स्वयं पड़कर उसकी गंभीरता से परिचित होना
155. चुटिया हाथ में होना :- वश में होना
156. तारे तोड़ लाना :- असंभव या अत्यत कठिन कार्य कर दिखाना
157. दोनों हाथ में लड्डू होना :- दो तरफा लाभ होना
158. यम की यातना :- भयंकर पीड़ा या नरक जैसा दुःख
159. पानी की तरह बहना :- अंधाधुंध खर्च करना
160. कान खड़े होना :- सावधान या सतर्क होना
167. चिकना घड़ा :- बेशर्म होना
168. दूध का धुला होना :- निर्दोष होना
169. डकार जाना :- किसी की वस्तु या धन को बेईमानी से हड़प लेना
170. आकाश पर दिया जलाना :- अज्ञान के अंधकार को मिटाना
171. तवे की बूँद होना :- तुरंत नष्ट हो जाना
172. गर्दन उठाना :- विरोध करना / विद्रोह करना
173. सुबह-शाम करना :- टालमटोल करना / कार्य में देरी करना
174. देवता कूंच कर जाना :- घबरा जाना / डर जाना
175. तेली का बैल होना :- हर समय काम में व्यस्त रहना
176. फक हो जाना :- घबरा जाना / भयभीत हो जाना
177. किनारा करना :- दूर हो जाना / संबंध तोड़ना
178. सिर मारना :- बहुत प्रयत्न करना
179. सिर पर सवार होना :- पीछे पड़ना / परेशान करना
180. सुख की नींद सोना :- चिंता-मुक्त होना
181. सिर पर पहाड़ रखना :- किसी को बहुत कठिन या असंभव कार्य सौंपना

182. चिराग ठंडा करना :- कुल समाप्त कर देना / वंश नष्ट कर देना
183. अंदर होना :- जेल में बंद होना
184. अंधेर मचाना :- अन्याय या उपद्रव करना
185. सीढ़ी - सीढ़ी करना :- धीरे - धीरे उन्नति करना
186. चाँदी का जूता :- रिश्वत देना / घूस देकर अपना काम निकलवाना
187. सूरज ढलना :- शाम होना
188. सूरज को दीपक दिखाना :- जो स्वयं अत्यंत गुणवान हो, उसे ज्ञान देना
189. सुदामा की कुटिया :- गरीब की झोपड़ी / निर्धन स्थिति
190. सुर्खाब के पर लगना :- किसी व्यक्ति में असाधारण गुण, कोई खास खूबी या विशेष गुण होना
191. गुरेज न करना :- परहेज न करना, मना न करना
192. काले कोसों :- बहुत दूर होना / व्यर्थ की बातें लिखना
193. फंदे में पड़ना :- धोखे में पड़ना
194. मिट्टी पलीद करना :- अपमानित करना / दुर्दशा करना
195. बाग - बाग होना :- बहुत खुश होना
196. सीनाजोरी करना :- गलती करने के बाद भी अपनी गलती न मानना और उलटा अकड़ दिखाना
197. द्राविड़ी प्राणायम खींचना :- टेढ़े या उल्टे ढंग से काम करना
198. पता चलना :- सुनगुन मिलना
199. सुई का भाला बना देना :- बात का बतंगड़ बनाना
200. सर्द हो जाना :- डर जाना / सहम जाना / उत्साह खत्म होना

काल

परिभाषा :- क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

क्रिया कब हुई, हो रही है या होगी - यह बताने वाला रूप 'काल' कहलाता है।

उदाहरण :- राम पढ़ता है। → वर्तमान समय
राम पढ़ रहा है। → वर्तमान समय
राम पढ़ रहा था। → बीता हुआ समय
राम पढ़ेगा। → आने वाला समय

* काल के मुख्य भेद :-

काल के 3 मुख्य भेद होते हैं :-

1) वर्तमान काल :-
क्रिया के वर्तमान समय में होने का बोध हो।
उदाहरण :- राम स्कूल जाता है। सीता खाना खा रही है।
बच्चे खेल रहे हैं।

2) भूतकाल :-
क्रिया के बीते हुए समय में होने का बोध हो।
उदाहरण :- राम स्कूल गया। सीता खाना खा रही थी।
बच्चे खेल रहे थे।

3) भविष्यत् काल :-
क्रिया के आने वाले समय में होने का बोध हो।

उदाहरण :- राम स्कूल जाएगा। सीता खाना खाएगी।
बच्चे कल खेलेंगे।

* वर्तमान काल के भेद :-

वर्तमान काल के सामान्यतः 5 भेद माने जाते हैं :-

1) सामान्य वर्तमान काल :-

जिससे कार्य के सामान्य रूप से वर्तमान में होने का पता चले।

पहचान :- ता है, ती है, ते हैं आदि

उदाहरण :- राम स्कूल जाता है। मोहन रोज अखबार पढ़ता है।
बच्चे मैदान में खेलते हैं।

2) अपूर्ण वर्तमान काल :-

जिससे पता चले कि कार्य वर्तमान समय में जारी है।

पहचान :- रहा है, रही है, रहे हैं आदि

उदाहरण :- राम पुस्तक पढ़ रहा है। सीता खाना बना रही है।
बच्चे खेल रहे हैं।

3) पूर्ण वर्तमान काल :-

जिससे पता चले कि कार्य अभी - अभी पूरा हुआ है।

उदाहरण :- राम खाना खा चुका है। मैंने काम कर लिया है।
वह दिल्ली जा चुका है।

4) संदिग्ध वर्तमान काल :-

जिससे वर्तमान समय में कार्य के होने में संदेह प्रकट हो।

पहचान :- ता होगा, ती होगी, ते होंगे

उदाहरण :- राम स्कूल जाता होगा। वह अभी घर पर बैठा होगा।
मोहन पढ़ता होगा।

5) तात्कालिक वर्तमान काल :-

जिस कार्य के अभी - अभी प्रारंभ होने का बोध हो।

उदाहरण :- वह अभी आता है।

भूतकाल के भेद

1) सामान्य भूतकाल :-

जिससे कार्य के बीते समय में सामान्य रूप से होने का पता चले।

उदाहरण :- राम स्कूल गया। मैंने खाना खाया।
सीता बाजार गई।

2) आसन्न भूतकाल :-

जिससे पता चले कि कार्य अभी - अभी पूरा हुआ है।

उदाहरण :- राम अभी - अभी आया है। मैंने खाना खाया है।
वह अभी दिल्ली से लौटा है।

3) पूर्ण भूतकाल :-

जिससे पता चले कि भूतकाल में कोई कार्य पहले ही पूरा हो चुका था।

उदाहरण :- राम खाना खा चुका था।
मेरे पहुँचने से पहले ट्रेन जा चुकी थी।

4) अपूर्ण भूतकाल :-

जिससे पता चले कि भूतकाल में कार्य जारी था।

उदाहरण :- राम पढ़ रहा था। बच्चे खेल रहे थे।
सीता खाना बना रही थी।

5) संदिग्ध भूतकाल :-

जिससे भूतकाल में हुए कार्य के संबंध में संदेह हो।

उदाहरण :- राम घर गया होगा। उसने खाना खाया होगा।
मोहन वहाँ पहुँच होगा।

6) हेतुहेतुमद् भूतकाल :-

जब भूतकाल में एक कार्य दूसरे कार्य पर निर्भर हो और दूसरा कार्य न होने के कारण पहला भी नहीं हुआ।

उदाहरण :- यदि तुम मेहनत करते, तो तुम सफल होते।
यदि वह समय पर आता, तो ट्रेन न छूटती।

भविष्यत् काल के भेद

1) सामान्य भविष्यत् काल :-

जिससे भविष्य में कार्य के सामान्य रूप से होने का पता चले।

उदाहरण :- राम कल दिल्ली जाएगा। मैं परीक्षा दूँगी।

पहचान :- गा, गे, गी

2) संभाव्य भविष्यत् काल

जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की संभावना प्रकट हो।

उदाहरण :- शायद आज बारिश हो। संभव है कि वह कल आए।

3) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल :-

जब भविष्य में होने वाला एक कार्य दूसरे कार्य पर निर्भर हो।

उदाहरण :- यदि तुम मेहनत करोगे, तो सफल होगे।
यदि वह आएगा, तो मैं भी जाऊँगा।

* काल	पहचान	उदाहरण
सामान्य वर्तमान	- ता, ते, ती	- राम पढ़ता है
अपूर्ण वर्तमान	- रहा है। रही है	- राम पढ़ रहा है
पूर्ण वर्तमान	- चुका है। लिया है	- राम पढ़ चुका है
संदिग्ध वर्तमान	- ता होगा	- राम पढ़ता होगा
सामान्य भूत	- किया / गया / आया	- राम गया
आसन्न भूत	- अभी - अभी + है	- राम अभी आया है।
पूर्ण भूत	- चुका था	- राम जा चुका था
अपूर्ण भूत	- रहा था	- राम पढ़ रहा था
संदिग्ध भूत	- होगा	- राम गया होगा
हेतुहेतुमद् भूत	- यदि / अगर + होता	- यदि पढ़ता तो पास होता
सामान्य भविष्यत्	- गा / गे / गी	- राम जाएगा
संभाव्य भविष्यत्	- शायद / संभवतः / हो	- राम शायद आए
हेतुहेतुद् भविष्यत्	- यदि / तो	- यदि पढ़ोगे तो पास होगे

कारक

* संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों, विशेषकर क्रिया के साथ जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं।

वाक्य में कौन काम कर रहा है, किस पर काम हो रहा है, किसके द्वारा हो रहा है, किसके लिए हो रहा है, कहाँ हो रहा है आदि बताने वाले संबंध को कारक कहते हैं।

उदाहरण :- राम ने कलम से पत्र लिखा।

इस वाक्य में –

- राम → काम करने वाला → कर्ता कारक
- कलम से → जिसके द्वारा काम हुआ → करण कारक
- पत्र → जिस पर काम हुआ → कर्म कारक

* कारक के प्रकार :-

1. कर्ता कारक :-
जो संज्ञा / सर्वनाम कार्य को करने वाला होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं।

चिन्ह : (ने)
लेकिन 'ने' का होना अनिवार्य नहीं है।

पहचान : कौन ? / किसने ?
उदाहरण : राम ने खाया खाना। , मोहन पुस्तक पढ़ता है।
सीता बाजार गई।
इनमें राम, सीता, मोहन = कर्ता।

* Trick :- काम करने वाला = कर्ता

2. कर्म कारक :-

जिस संज्ञा या सर्वनाम पर कर्ता की क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

चिन्ह :- (को)

पहचान :- किसे / किसको

उदाहरण :- राम ने मोहन को बुलाया
माँ ने बच्चे को समझाया
मैंने राहुल को देखा

यहाँ मोहन, बच्चा और राहुल पर क्रिया का प्रभाव पड़ रहा है।

Trick :- जिस पर काम का असर पड़े = कर्म

3. करण कारक :-

जिस साधन या माध्यम से कर्ता कार्य करता है, उसे करण कारक कहते हैं।

चिन्ह :- (से, के द्वारा)

पहचान :- किसके द्वारा / किस साधन से

उदाहरण :- राम ने कलम से पत्र लिखा
वह चाकू से फल काटता है
पुलिस ने चोर को बंदूक से डराया

यहाँ कलम, चाकू, बंदूक = करण कारक

Trick :- साधन / माध्यम = करण

4. संप्रदान कारक

जिसके लिए या जिसे कुछ दिया जाए, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

चिन्ह :- (को, के लिए)

पहचान :- किसके लिए / किसे दिया

उदाहरण :- माँ ने बच्चे के लिए खाना बनाया।
×राम ने मोहन को पुस्तक दी।×
पिता ने बेटे के लिए घड़ी खरीदी।

Trick :- जिसके लिए / जिसे कुछ दिया जाए = संप्रदान

5. अपादान कारक

जिससे किसी वस्तु या व्यक्ति का अलग होना, दूर होना, निकलना, गिरना या तुलना होना प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

चिन्ह :- (से)

पहचान :- कहाँ से अलग हुआ / कहाँ से दूर हुआ

उदाहरण :- पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
राम दिल्ली से आया।
गंगा हिमालय से निकली है।
राम मोहन से लंबा है।

यहाँ 'से' अलगाव / स्त्रोत / तुलना का भाव दे रहा है।

Trick :-

अलगाव / दूरी / स्त्रोत / तुलना = अपदान

* करण vs अपादान

दोनों का चिन्ह 'से' है।

करण :- साधन का भाव

राम ने चाकू से फल काटा

चाकू = साधन → करण

अपादान :- अलगाव / दूरी / स्त्रोत का भाव

पेड़ से पत्ता गिरा।

पत्ता पेड़ से अलग हुआ → अपादान

6. संबंध कारक

दो संज्ञाओं या सर्वनामों के बीच संबंध बताने वाला कारक संबंध कारक कहलाता है।

चिन्ह :- (का, के, की)

पहचान :- किसका / किसके / किसकी

उदाहरण :- यह राम की पुस्तक है।
यह मोहन का घर है।
वे भारत के सैनिक हैं।

Trick :- का / के / की = संबंध

7. अधिकरण कारक :-

जिस स्थान या आधार पर क्रिया के होने का भाव प्रकट हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

चिन्ह :- (में, पर)

पहचान :- कहाँ / किसमें / किस पर

उदाहरण :- बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।
पुस्तक मेज पर रखी है।
मछलियाँ तालाब में रहती हैं।

Trick :- स्थान / आधार → अधिकरण

8. संबोधन कारक

जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को बुलाने या पुकारने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं।

चिन्ह :- (हे, अरे, ओ)

उदाहरण :- हे भगवान! मेरी रक्षा करो।
अरे मोहन! इधर आओ।
ओ मित्र! मेरी बात सुनो।

Trick :- बोलना / पुकारना = संबोधन

Summary :-

कर्ता	→	ने
कर्म	→	को
करण	→	से, के द्वारा
संप्रदान	→	को, के लिए
अपादान	→	से
संबंध	→	का, के, की
अधिकरण	→	में, पर
संबोधन	→	हे, अरे, ओ

* क्रिया *

परिभाषा :- जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

उदाहरण :- राम पढ़ता है।
सीता गाना गाती है।
बच्चा सो रहा है।

* क्रिया के मुख्य भेद :-

1. सकर्मक क्रिया

जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

क्रिया से पहले क्या ? / किसे ? / किसको ? पूछिए।
अगर उत्तर मिल जाए → सकर्मक क्रिया

उदाहरण :- मोहन पुस्तक पढ़ता है।
मोहन क्या पढ़ता है ? → पुस्तक
इसलिए 'पढ़ता है' = सकर्मक क्रिया

उदाहरण :- मीना आम खाती है।
राधा पत्र लिखती है।
अध्यापक बच्चों को पढ़ाते हैं।

2. अकर्मक क्रिया

जिस क्रिया का फल कर्म पर नहीं पड़ता, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
क्रिया से क्या ? किसे ? किसको ? पूछने पर कोई उचित उत्तर न मिले।

उदाहरण :- बच्चा सोता है।

बच्चा क्या सोता है ? किसे सोता है ? → कोई उत्तर नहीं मिला

इसलिए 'सोता है' = अकर्मक क्रिया

उदाहरण :- राम दौड़ता है। मोहन हँसता है।
पक्षी उड़ते हैं। सूरज निकलता है।

3. <u>द्विकर्मक क्रिया</u> :-

जिस सकर्मक क्रिया के साथ दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण :- माँ ने बच्चे को दूध दिया।

बच्चे को → कर्म
दूध → कर्म
इसलिए 'दिया' = द्विकर्मक क्रिया

4. <u>मुख्य क्रिया</u> :-

जो क्रिया वाक्य में मुख्य कार्य का बोध कराए, उसे मुख्य क्रिया कहते हैं।

राम खाना खाता है।
↳ मुख्य क्रिया

5. <u>सहायक क्रिया</u> :-

जो मुख्य क्रिया की सहायता करे, उसे सहायक क्रिया कहते हैं।

राम पढ़ रहा है।
↳ सहायक क्रिया

सहायक क्रियाएँ :- है, हैं, हूँ, था, थे, थी, रहा, रहे, रही, चुका, चुके, सकती, सकता आदि।

6. संयुक्त क्रिया :-

जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर एक विशेष अर्थ देती हैं, तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

उदाहरण :- वह काम कर चुका है।

कर + चुका है → संयुक्त क्रिया

7. नामधातु क्रिया :-

संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण से बनने वाली क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं।

उदाहरण :-

हाथ → हथियाना अपना → अपनाना

लज्जा → लजाना गरम → गरमाना

8. प्रेरणार्थक क्रिया :-

जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करे, तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।

उदाहरण :- माँ बच्चे को खाना खिलाती है।

बच्चा खा रहा है, लेकिन माँ उसे खिलाने के लिए प्रेरित कर रही है।

9. पूर्वकालिक क्रिया :-

जब एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले पूरी हो जाए, तो पहली क्रिया पूर्वकालिक कहलाती है।

पहचान :- कर, करके, के आदि आते हैं।

कृदंत

धातु में प्रत्यय लगाकर बनने वाले शब्द कृदंत कहलाते हैं।

पढ़ + ना = पढ़ना
लिख + ना = लिखना
जा + ना = जाना

Revision :-

क्रिया = कार्य का बोध
धातु = क्रिया का मूल रूप
सकर्मक = कर्म चाहिए
अकर्मक = कर्म नहीं चाहिए
द्विकर्मक = दो कर्म
मुख्य क्रिया = मुख्य कार्य
सहायक क्रिया = मुख्य क्रिया की सहायता
संयुक्त क्रिया = दो या अधिक क्रियाओं का मेल
प्रेरणार्थक = स्वयं न करके करवाना
पूर्वकालिक = पहले पूरी होने वाली क्रिया
नामधातु = दूसरे शब्द से बनी क्रिया

क्रिया विशेषण

परिभाषा :- जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं।

उदाहरण :- राम धीरे-धीरे चलता है।
सीता कल आएगी।
बच्चे बाहर खेल रहे हैं।
वह बहुत तेज दौड़ता है।

क्रिया कैसे, कब, कहाँ या कितनी हुई - यह बताने वाले शब्द क्रिया - विशेषण कहलाते हैं।

क्रिया - विशेषण के प्रमुख भेद :-

1. रीतिवाचक क्रिया - विशेषण

जो शब्द क्रिया के होने की रीति / ढंग बताते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रिया - विशेषण कहते हैं।

प्रश्न :- कैसे? किस प्रकार?

उदाहरण :- वह धीरे चलता है। राम तेज दौड़ता है।

Imp words :-

धीरे, तेज, जल्दी, चुपचाप, अचानक, सहसा, ऐसे, वैसे, मिलकर, झटपट, अवश्य, निस्संदेह आदि।

2. कालवाचक क्रिया - विशेषण

जो शब्द क्रिया के होने का समय बताते हैं, उन्हें कालवाचक क्रिया - विशेषण कहते हैं।

प्रश्न :- कब ?

उदाहरण :- मैं आज दिल्ली जाऊँगा। वह कल आया था।
राम अब पढ़ रहा है।

Imp words :-

आज, कल, अब, तब, पहले, बाद में, अभी, कभी, हमेशा, प्रतिदिन, शेज, प्रायः, सदा आदि।

3. स्थानवाचक क्रिया - विशेषण

जो शब्द क्रिया के होने का स्थान बताते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रिया - विशेषण कहते हैं।

उदाहरण :- बच्चे बाहर खेल रहे हैं। वह अंदर बैठा है।

प्रश्न :- कहाँ ?

Imp words :-

यहाँ, वहाँ, कहाँ, इधर, उधर, अंदर, बाहर, ऊपर, नीचे, आगे, पीछे, आसपास, दूर, पास, आदि।

4. परिमाणवाचक क्रिया - विशेषण

जो शब्द क्रिया की मात्रा या परिमाण बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया - विशेषण कहते है।

प्रश्न :- कितना ? कितनी मात्रा में ? किस सीमा तक ?

उदाहरण :- वह बहुत दौड़ता है।
मैं कम सोता हूँ।

Imp words :-

बहुत, कम, अधिक, अत्यंत, थोड़ा, काफी, इतना, उतना, सर्वथा, बिल्कुल, कुछ आदि।

* विशेषण और क्रिया विशेषण में अंतर :-

संज्ञा / सर्वनाम की विशेषता → विशेषण
क्रिया की विशेषता → क्रिया - विशेषण

राम तेज लड़का है।
↓
विशेषण

राम तेज दौड़ता है।
↓
क्रिया - विशेषण

* क्रिया - विशेषण केवल क्रिया की ही विशेषता नहीं बताता, कई बार यह विशेषण या दूसरे क्रिया - विशेषण की भी विशेषता बताता है।

राम बहुत तेज दौड़ता है।
- बहुत → क्रिया
- तेज → क्रिया - विशेषण
- दौड़ता → तेज की विशेषता बता रहा है।

Trick :-

कैसे = रीतिवाचक
कब = कालवाचक
कहाँ = स्थानवाचक
कितना = परिमाणवाचक

* विशेषण *

* जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

उदाहरण :- सुंदर लड़की, पाँच लड़के, थोड़ा पानी

* विशेष्य :-

जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

उदाहरण :- सुंदर लड़की, पाँच लड़के

* विशेषण के मुख्य प्रकार :-

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

* गुणवाचक विशेषण :-

जो विशेषण संज्ञा / सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, रूप, आकार, अवस्था, स्वभाव आदि का बोध कराएँ, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण :- सुंदर लड़की, काला घोड़ा, मीठा आम

गुणवाचक में क्या-क्या आ सकता है :-

- गुण → अच्छा, सुंदर, वीर
- दोष → बुरा, आलसी, कायर
- रंग → लाल, पीला, काला
- आकार → लंबा, छोटा, गोल
- दशा → स्वस्थ, बीमार, प्रसन्न
- स्वभाव → शांत, क्रोधी, दयालु
- स्वाद → मीठा, खट्टा, कड़वा

* संख्यावाचक विशेषण :-

जो विशेषण संज्ञा की संख्या या क्रम का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण है।

उदाहरण :- तीन लड़के, पाँच किताबें, पहला स्थान

संख्यावाचक विशेषण के प्रमुख प्रकार :-

(a) निश्चित संख्यावाचक :-

जिससे निश्चित संख्या का पता चले।

⇒ एक, दो, तीन, सौ, आदि

उदाहरण :- पाँच विद्यार्थी आए

(b) अनिश्चित संख्यावाचक :-

जिससे निश्चित संख्या का पता न चले।

⇒ कुछ, कई, अनेक, थोड़े, बहुत-से, आदि।

उदाहरण :- कई विद्यार्थी परीक्षा में आए।

(c) क्रमवाचक :-

जो क्रम का बोध कराए।

⇒ पहला, दूसरा, तीसरा आदि

उदाहरण :- वह प्रथम स्थान पर आया।

(d) आवृत्तिवाचक :-

जो संख्या की आवृत्ति (गुणा बताए)

⇒ दुगुना, तिगुना, चौगुना, दस गुना आदि

उदाहरण :- राम की आयु मोहन से दोगुनी है।

(e) समुदायवाचक :-

जो पूरे समूह का बोध कराए।

⇒ दोनों, चारों, तीनों आदि

उदाहरण :- दोनों भाई बाजार गए।

* परिमाणवाचक विशेषण :-

जो विशेषण किसी वस्तु की मात्रा या परिमाण का बोध कराएँ, उन्हे परिमाणवाचक विशेषण कहते है।

उदाहरण :- थोड़ा पानी, अधिक दूध, चार किलो चावल

* Trick :-

जिसे गिना जा सके → संख्यावाचक

जिसे मापा / तौला जा सके → परिमाणवाचक

पाँच किताबें → संख्यावाचक, पाँच किलो चावल → परिमाण-वाचक

* सार्वनामिक विशेषण :-

जब सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताए, तब वह सार्वनामिक विशेषण कहलाता है।

उदाहरण :- यह लड़का, वह किताब, कोई व्यक्ति

* सार्वनामिक विशेषण के प्रकार :-

(1) निश्चिवाचक

यह, वह, ये, वे

उदाहरण :- यह किताब मेरी है।

(2) अनिश्चिवाचक

कोई, कुछ, किसी

उदाहरण :- कोई व्यक्ति आया है।

(3) प्रश्नवाचक :-

कौन-सा, कैसा, कितना

उदाहरण :- कौन-सा लड़का तुम्हारा भाई है?

(4) संबंधवाचक

जो, जिस, जिसका, जिसको

उदाहरण :- जिस लड़के ने मेहनत की, वह सफल हुआ।

(5) निजवाचक

अपना, अपने, अपनी

उदाहरण :- उसने अपनी किताब खोली।

* सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण मे अंतर :-

1. वह लड़का होशियार है

↓

वह सार्वनामिक विशेषण क्योंकि लड़के की विशेषता बता रहा है।

2. वह होशियार है।
↓
सर्वनाम है क्योंकि संज्ञा के स्थान पर use हुआ है।

* प्रविशेषण

जो शब्द विशेषण की विशेषता बताता है, उसे प्रविशेषण कहते है।

उदाहरण :- राम बहुत अच्छा लड़का है।

अच्छा → विशेषण
बहुत → प्रविशेषण

आम अत्यंत मीठा है।

PYQs :-

1. रेखांकित शब्द के ~~प्रकार~~ आधार पर विशेषण के उचित भेद को चुन कर वाक्य पूर्ण करें -
मीरा ने आधा लीटर दूध खरीदा। वाक्य में ____ विशेषण है।

(a) गुणवाचक (c) सार्वनामिक
(b) संख्यावाचक (d) परिमाणवाचक ✓

2. दिए गए वाक्य में गुणवाचक विशेषण का चयन करके रिक्त स्थान की पूर्ति करें -
सामान्य-ज्ञान प्रतियोगी में ____ विद्यार्थी उतीर्ण हुए।

(a) योग्य ✓ (c) बहुत
(b) हजारों (d) कुछ

3. रेखांकित शब्द के आधार पर विशेषण के उचित भेद को चुन कर वाक्य पूर्ण करें - उसने थोड़ा पानी पिया।

(a) गुणवाचक (c) सार्वनामिक
(b) परिमाणवाचक ✓ (d) संख्यावाचक

4. दिये गये वाक्य का रिक्त स्थान सर्वोचित विशेषण शब्द से पूर्ण करें-
_____समुद्र की नीली लहरें बहुत सुंदर लगती हैं।

(a) सीमित (c) विशाल ✓
(b) सूखे (d) क्षुद्र

5. सहकारिता का यह बिल्कुल ___ उपयोग है।

(a) मुलायम (c) घंमडी
(b) नया ✓ (d) पतला

(6) मेरी माताजी रसोई में _____ भोजन बना रही है।

(a) स्वादिष्ट ✓ (c) खराब
(b) कच्चा (d) पतला

7. दिए गए वाक्य में गुणवाचक विशेषण शब्द का चयन करें -
शिक्षक ने छात्रों को _____ परियोजना को शुरू करने के लिए उत्साहित किया।

(a) बहुत (c) कुछ
(b) नई ✓ (d) हजारों

8. घने जंगल में _____ शेर जोर से दहाड़ रहा है।

(a) खूँखार ✓ (c) कमजोर
(b) मासूम (d) सीधा

9. मैं _____ गाय को रोटी खिला रही हूँ।

(a) काली ✓ (c) कमी
(b) यद्यपि (d) नसीब

10. हिमालय भारत का सबसे ____ पर्वत है।

(a) ऊँचा (c) चौड़ा

(b) लंबा (d) बड़ा

11. उचित गुणवाचक विशेषण का चयन कीजिए -

एक ____ आदमी खड़ा था।

(a) वही (c) मोटा-सा

(b) ऐसा-ही (d) यही

12. वहाँ ____ अंधकार है।

(a) स्वर्विम (c) गहन

(b) आलोकित (d) नीरस

13. यह मकान बहुत ____ है।

(a) वहाँ (c) ऊँचा

(b) बहुत (d) नहीं

14. सार्वनामिक विशेषण चुनें :- ____ कमाई खाओ।

(a) अपनी (c) उनका

(b) तुम्हारा (d) अपना

15. रिया की टोपी ____ है।

(a) ताज़ा (c) गोल

(b) दुबली (d) अनुचित

16. ____ आदमी आपको पूछ रहा था।

(a) क्यों (c) जैसा

(b) थोड़ा (d) कोई

17. मेरे दार का रंग _____ है।

(a) लाल (c) चौरस

(b) वतर्मान (d) गोल

18. संख्यावाचक विशेषण का चयन करें -
प्रशासन ने _____ यात्रियों के लिए पर्याप्त भोजन और चिकित्सा की व्यवस्था की।

(a) सभ्य (c) युवा

(b) नेपाली (d) दस लाख

19. किसानों की पगड़ी का रंग _____ है।

(a) पीला (c) तिरछा

(b) सुडौल (d) भीतरी

20. वंसत ऋतु में खिले फूलों की _____ छटा ने पूरे उपवन को जीवंत बना दिया।

(a) काली (c) रंगीन

(b) हरी (d) रंगत

21. विशेषण का उचित भेद चुनें -
उसने आँठ दिनों तक अभ्यास किया।

(a) संख्यावाचक (c) गुणवाचक

(b) परिणामवाचक (d) सार्वनामिक

22. मेरे पास एक _____ संदूक है।

(a) पुराना (c) दुर्बल

(b) बहादुर (d) समझदार

23. कक्षा की पाठ्यपुस्तक _____ होनी चाहिए।

(a) बलवान (c) आकर्षक
(b) प्रेरणादायक (d) चंचल

24. उषा की टोपी _____ है।

(a) सांवली (c) दुबली
(b) चालाक (d) सफ़ेद

25. उसके बालों का रंग _____ है।

(a) सुनहरा (c) चौकोर
(b) ताजा (d) न्यायी

26. वह छोटा बच्चा _____ मिट्टी से घर बना रहा है।

(a) गीली (c) सड़ी
(b) सूखी (d) पक्की

27. प्रातःकाल आकाश में फैले _____ बादलों ने पूरे वातावरण को मनोहरी कर दिया।

(a) नीलाभ (c) बदले
(b) नीलिमा (d) नीला

28. कक्षा में आज _____ विद्यार्थी अनुपस्थित हैं, इसलिए शोर कम है।

(a) भारी (c) कमज़ोर
(b) सारा (d) कुछ

29. गुणवाचक विशेषण चुनें → _____ नदी बहती है।

(a) बर्फीली (c) तीसरी
(b) कोई (d) बहुत

30. संख्यावाचक विशेषण चुनें → उसे ____ आलू चाहिए।

(a) ताज़े (c) भले

(b) दोषरहित (d) पाँच

31. गुलाब का फूल ____ होता है।

(a) तिकोना (c) लाल

(b) कठोर (d) प्राचीन

32. ____ किसान कड़ी धूप में खेत में काम करता है।

(a) बुद्धिहीन (c) मेहनती

(b) आलसी (d) धनी

33. यह ____ लड़का है।

(a) मोटापा (c) अच्छाई

(b) कम (d) अच्छा

34. यहाँ ____ लड़कियाँ बैठी थीं।

(a) पतला (c) दस

(b) भला (d) मोटा

35. मनीषा ____ है।

(a) सुंदर (c) पिघला

(b) चौड़ा (d) सुनहरा

36. ____ लोमड़ी ने भूखे कौवे को आसानी से ठग लिया।

(a) मूर्ख (c) मेहनती

(b) चतुर (d) कर्मठ

37. संध्या होते ही सूर्य की किरणों से रंगी _____ आभा ने नदी के जल को स्वर्ण-सा चमका दिया।

(a) नीली (c) स्वर्णता
(b) स्वर्णिम (d) काली

38. इस ऐतिहासिक शोध के लिए डॉ. वर्मा ने _____ अध्ययन किया है, जिससे नई जानकारियाँ सामने आई हैं।

(a) थोड़ा (c) सतही
(b) कमज़ोर (d) गहन

39. मुझे _____ चावल दे दो।

(a) दैनिक (c) कुशल
(b) बुरा (d) दो सेर

40. बच्चों को _____ भर दूध ज़रूर पीना चाहिए।

(a) बाल्टी (c) पाव
(b) रती (d) तोला

41. मेरी स्कूल शर्ट _____ रंग की है।

(a) भविष्य (c) गाढ़ी
(b) ईमानदार (d) पीले

42. संख्यावाचक विशेषण चुनें :- सविता को गए हुए _____ समय हो गया है, वह अभी तक नहीं आई।

(a) नीचे (c) जितना
(b) आज (d) काफी

43. रेखांकित शब्द का उचित भेद पहचानें :-
मेरी पहली पुस्तक प्रकाशित हो गई।

(a) संख्यावाचक
(b) सार्वनामिक
(c) परिणामवाचक
(d) गुणवाचक

44. श्याम बहुत ही ____ स्वभाव का लड़का है।

(a) छोटे
(b) शांत
(c) गुरुतम
(d) दुर्गम

45. मां ने उसे ____ दूध पिलाया।

(a) चार
(b) कितना
(c) गर्म
(d) पीला

46. ____ गुलाब की खुशबू पूरे कमरे में फैल गई।

(a) पुराने
(b) लाल
(c) बासी
(d) सूखे

47. नदी का पानी ____ दिख रहा है।

(a) चालाक
(b) बलवान
(c) चंचल
(d) मेहनती

48. हमारे घर में ____ बिल्ली है।

(a) एक
(b) तथापि
(c) किन्तु
(d) यद्यपि

49. हमें भारतीय समाज का ____ अध्ययन करना चाहिए।

(a) कोमलतन
(b) ऐतिहासिक
(c) उच्चतम
(d) मिलनसार

अनेकार्थी शब्द

1. कृश :-

दुबला - पतला, थोड़ा, छोटा, अल्प, सूक्ष्म (बारीक), दान

2. छाजन :-

छप्पर / छान, वस्त्र (आच्छादन), चर्म रोग

3. फल :-

परिणाम / नतीजा, लाभ, मेवा (खाने योग्य), संतान

4. रस :-

आनंद (काव्य या साहित्य से मिलने वाली अनुभूति)
स्वाद (किसी भी खाद्य पदार्थ का स्वाद)
निचोड़ / अर्क (किसी वस्तु या फल का तरल रस)
सार (निष्कर्ष)

5. उत्तर :-

जवाब, दिशा, हल, बाद का / पिछला, बदला

6. उरु :-

श्रेष्ठ (उत्तम या महान)
विशाल, जाँघ, विस्तीर्ण (जो बहुत दूर तक फैला हो)

7. तीक्ष्ण :-

तेज (पैना), तीखा, कुशाग्र / तीव्र, प्रखर / उग्र (अत्यंत गरम)
कठोर (व्यवहार से)

8. जोरू :- स्त्री, पत्नी

9. अपवाद :- कलंक, दोष, नियम की छूट

10. कौशिक :- उल्लू, सपेरा, नेवला, इंद्र, विश्वामित्र

11. दाम :- मूल्य, रस्सी, धन, माला

12. नाल :- नल, घोड़े की नाल, डंठल / डंडी, नाभिनाल

13. सारंग :-
जीव-जंतु और पक्षी :- मोर, कोयल, चातक (पपीहा), हंस, सर्प (सांप), सिंह, घोड़ा, हाथी, हिरण, भौंरा, बाज।
प्रकृति और खगोल :- बादल (मेघ), सूर्य, समुद्र, चंद्रमा
वस्तुएं और अन्य :- दीपक, धनुष, शंख, सोना (स्वर्ण), स्त्री, जल, वस्त्र, कामदेव।

14. रंग :-
वर्ण (चित्रकला या मूल रंग (लाल, पीला))
शोभा / रौनक (सुंदरता), रूप (आकृति या दिखावट),
प्रेम / अनुराग (आपसी स्नेह या लगाव का भाव),
रंग-मंच (स्टेज)

15. लक्ष्य :- निशाना, उद्देश्य / ध्येय, लाख, बहाना

16. तात :- पिता, पूज्य, भाई, मित्र, प्यारा, गुरू, पुत्र

17. मधु :- शहद, मदिरा (शराब), वसंत ऋतु, मीठा, पराग (पुष्प रस)

18. अंक :- गोद, संख्या, चिन्ह, भाग्य, भाग, प्राप्त अंक

19. खग :- पक्षी, तारा, गन्धर्व, जुगनू, बाण (तीर)

20. कनक :- स्वर्ण, धतूरा, गेहूँ, खजूर, पलाश (सुंदर वृक्ष)

21. पट :- कपड़ा, दरवाजा, पर्दा / आवरण, पल्ला, किनारा

22. वीथी :- पंक्ति (कतार), मार्ग, बाजार, धुरी-चक्र

23. कुशल :- चतुर, दक्ष, निपुण, प्रवीण, योग्य

24. काटना :- अलग करना, डसना, नष्ट करना, समय बिताना, कम करना, बात काटना

25. कल :- बीता हुआ दिन, आने वाला दिन, मशीन, चैन, पुर्जा

26. कंज :- कमल, ब्रह्मा, अमृत, केश

27. दल :- पत्ता, समूह, सेना, टुकड़ा, पक्ष, झुंड

28. सार :- तत्व (सत्य), निष्कर्ष, रस, लाभ, धैर्य, शक्ति

29. आचार्य :- गुरू, शिक्षक, पंडित, विद्वान

30. क्षुद्र :- नीच, कंजूस, छोटा, तुच्छ, अल्प, क्रूर, निर्धन

31. गद्दी :- बैठने का आसन, सिंहासन

32. खर :- गधा, दुष्ट, तिनका, कड़ा, तीक्ष्ण, मोटा, राक्षस

33. अंग :- शरीर (तन), भाग, शाखा, पहलू (पक्ष)

34. अंचल :- प्रदेश / क्षेत्र, सीमा / किनारा, आँचल / पल्लू

35. पतंग :- सूर्य, पक्षी, टिड्डी, फतिंगा, नाव

36. हंस :- प्राण, सूर्य, आत्मा, श्वेत (सफेद), योगी

37. जलज :- कमल, मोती, शंख, मछली, चंद्रमा, जोंक

38. टेक :- सहारा / अवलंब , हठ / जिद , प्रतिज्ञा / प्रण , गीत की मुख्य पंक्ति, आदत

39. हर :- प्रत्येक , शिव

40. आम :- फल , सामान्य / मामूली , सर्वसाधारण , अजीर्ण / रोग

41. अचल :- पर्वत , स्थिर / गतिहीन , अटल (निश्चित)

42. व्योम :- आकाश , अंतरिक्ष , अभ्रक (खनिज पदार्थ) , कल्याण, शून्य , जल , मेघ

43. मित्र :- दोस्त , साथी , सूर्य , प्रिय

44. अमृत :- सुधा , जल , दूध , अन्न , पारा (धातु) , घी , सोम, अमर

45. उच्च :- श्रेष्ठ , ऊपर , उठा हुआ , बड़ा , जोर का (तेज) , शिखर

46. शक्ति :- बल , सामर्थ्य , योग्यता , प्रभाव , प्रकृति , देवी

47. नाक :- स्वर्ग , इच्चत , नासिका , आकाश

48. अक्षर :- वर्ण , अविनाशी (नष्ट न होने वाला) , मोक्ष , आकाश

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द / वाक्यांश के लिए एक शब्द

*

1. बिना घर के :- अनिकेतन
2. विवाह में वर को दान रूप में कन्या देने की रीति :- कन्यादान
3. परंपरा से कही गई बात या युक्ति :- अनुश्रुत
4. जिसे बुलाया न गया हो :- अनागत
5. दूसरों के (सुख के) लिए अपने सुखों का त्याग :- आत्मोसर्ग
6. जिसका आचरण अच्छा न हो :- दुराचारी
7. जो रोका न गया हो :- अनिरुद्ध
8. पैर से सिर तक :- आपादमस्तक
9. जो हमेशा रहे :- शाश्वत
10. घास छीलने वाला :- घसियारा
11. वह स्त्री जिसका पति जीवित हो :- सधवा
12. खून से रंगा हुआ :- रक्तरंजित
13. जो पढ़ा न हो :- अनपढ़
14. जो सभी को खुश कर दे :- सर्वहर्षक
15. जो कभी न मुड़े :- अपरिवर्तनीय
16. जो इंद्रियों द्वारा न जाना जा सके :- अगोचर
17. सीमा का अनुचित उल्लंघन :- अतिक्रमण
18. सौ वर्ष का समय :- शताब्दी
19. जिस पुरुष की पत्नी मर गई हो :- विधुर
20. जिसके पार देखा जा सके :- पारदर्शी
21. जिसकी इंद्रियाँ वस में हो :- जितेंद्रिय
22. जो प्रतिदिन होता है :- दैनिक
23. झूठ बोलने वाला :- झूठा

24. एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया हुआ :- स्थानांतरित
25. जिसे जीता न जा सके :- अजेय
26. किसी के गुण दोष की विवेचना करने वाला :- आलोचक
27. नाटक का पर्दा गिरना :- पटाक्षेप
28. कार्य की इच्छा :- चिकीर्षा
29. जिसे ज्ञान प्राप्त करने की प्यास हो :- ज्ञानपिपासु
30. जो बिना वेतन के काम करे :- अवैतनिक
31. बड़ा बनने की इच्छा रखने वाला :- महत्वाकांक्षी
32. जो कहा गया है :- कथित
33. जो संगीत जानता है :- संगीतज्ञ
34. एक ही जाती के होना :- सजातीय
35. जिसका कोई आकार न हो :- निराकार
36. अपना अधिकार अन्य को सौंपना :- अभ्यर्पण
37. एक ही माता से जन्म लेने वाला भाई :- सहोदर
38. जो जीता न जा सके :- अजय
39. सूरज के निकलने से पूर्व का समय :- उषाकाल
40. कम खर्च करने वाला :- मितव्ययी
41. परंपरा से चली आ रही बात :- अनुश्रुति
42. सात दिनों की अवधि :- सप्ताह
43. ज्ञान अर्जित करने का कार्य :- ज्ञानोपार्जन
44. जो पान करने योग्य न हो :- अपेय
45. अपनी हत्या करने वाला :- आत्मघाती
46. गुरू के समीप रहने वाला :- अंतेवासी
47. प्रपंच करने वाला :- प्रपंची
48. किसी प्रश्नपत्र के लिए निर्धारित कुल अंक :- पूर्णांक

49. जो जाना न सा सके :- अज्ञेय
50. जिसकी उपमा न दी जा सके :- अनुपम
51. जो हमेशा सत्य बोलता है :- सत्यवादी
52. जिसे पढ़ा न जा सके :- अपाठ्य
53. स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र :- ओढ़नी
54. जिसमें कोई विवाद न हो :- निर्विवाद
55. साथ पढ़ने वाला :- सहपाठी
56. गोद लिया हुआ पुत्र :- दत्तक
57. जो केवल अपने लाभ की सोचे :- स्वार्थी
58. जो उपकार को मानता हो :- कृतज्ञ
59. जो दुसरों के दु:ख में दुखी होता है :- दयालु
60. जिसकी घोषणा की गई हो :- घोषित
61. बिना पलक झपकाए :- अनिमेष
62. बहुत-सी भाषाएँ जानने वाला :- बहुभाषाविद्
63. पत्थर के समान हृदय वाला :- पाषाणहृदय
64. कान का नीचे लटकता हुआ कोमल भाग :- कर्णपाली
65. अलग-अलग अवयवों को एक में जोड़ना :- संश्लेषण
66. विपरीत क्रम में चलनेवाला :- विलोलक
67. बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात :- अतिशयोक्ति
68. हाथी की पीठ पर रखी जाने वाली चौकी :- हौदा
69. जो प्रमान से सिद्ध न हो सके :- अप्रमेय
70. दृष्टिहीनों को पढ़ाने की लिपि :- ब्रेललिपि
71. जो दिखाई न दे :- अदृश्य

72. जिसकी सभी कामनायें पूरी हो गई हों :- आप्तकाम
73. जो पहले न हुआ हो :- अपूर्व
74. जिस पर विजय पाना कठिन हो :- दुर्जेय
75. बहुत अच्छा वक्ता :- वागीश्वर
76. जिसकी तुलना न हो :- अतुलनीय
77. दो नदियों के मिलन का स्थान :- संगम
78. दूसरों पर आश्रित रहने वाला :- परावलंबी
79. जिसको रोका न जा सके :- अटल
80. धर्म को चलानेवाले :- पुजारी
81. जो किसी एक ही विषय में पारंगत हो और उसी के अध्ययन-मनन में जीवन समर्पित कर दे :- विशेषज्ञ
82. वह स्थान जहाँ जाँता या चक्की गड़ी हो :- जँतसार
83. जो सहन करने में समर्थ हो :- सहनशील
84. प्राणों पर संकट लाने वाला :- सांघातिक
85. अपने जीवन का स्वलिखित लेखन :- आत्मकथा
86. हाथ से लिखी गई पुस्तक :- पांडुलिपि
87. एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना :- विनिमय
88. अधिक समय तक जीते रहने की इच्छुक :- जिजीविषु
89. जिसके चारों ओर मुख हो :- ~~क्षिप्रहस्त~~ चौमुखा
90. जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो :- क्षिप्रहस्त
91. सेना का वह भाग जो सबसे आगे रहता है :- हरावल
92. छात्रों को दिया जाने वाला अनुदान :- छात्रवृत्ति
93. जिसने ख्याति प्राप्त की हो :- ख्यातिलब्ध
94. एक ~~बात~~ बार कही बात को दोहराते रहना :- पिष्टपेषण

72. जिसकी सभी कामनायें पूरी हो गई हों :- आप्तकाम
73. जो पहले न हुआ हो :- अपूर्व
74. जिस पर विजय पाना कठिन हो :- दुर्जेय
75. बहुत अच्छा वक्ता :- वागीश्वर
76. जिसकी तुलना न हो :- अतुलनीय
77. दो नदियों के मिलन का स्थान :- संगम
78. दूसरों पर आश्रित रहने वाला :- परावलंबी
79. जिसको रोका न जा सके :- अटल
80. धर्म को चलानेवाले :- पुजारी
81. जो किसी एक ही विषय में पारंगत हो और उसी के अध्ययन-मनन में जीवन समर्पित कर दे :- विशेषज्ञ
82. वह स्थान जहाँ जाँता या चक्की गड़ी हो :- जँतसार
83. जो सहन करने में समर्थ हो :- सहनशील
84. प्राणों पर संकट लाने वाला :- सांघातिक
85. अपने जीवन का स्वलिखित लेखन :- आत्मकथा
86. हाथ से लिखी गई पुस्तक :- पांडुलिपि
87. एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना :- विनिमय
88. अधिक समय तक जीते रहने की इच्छुक :- जिजीविषु
89. जिसके चारों ओर मुख हो :- ~~क्षिप्रहस्त~~ चौमुखा
90. जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो :- क्षिप्रहस्त
91. सेना का वह भाग जो सबसे आगे रहता है :- हरावल
92. छात्रों को दिया जाने वाला अनुदान :- छात्रवृत्ति
93. जिसने ख्याति प्राप्त की हो :- ख्यातिलब्ध
94. एक ~~बात~~ बार कही बात को दोहराते रहना :- पिष्टपेषण

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

Part 2

1. जो पृथ्वी से संबंधित है :- पार्थिव
2. जो स्वयं भोजन बनाकर खाता हो :- स्वयंपाकी
3. दूसरों पर उपकार करने वाला :- परोपकारी
4. किसी पद का उम्मीदवार :- प्रत्याशी
5. जो भूख से व्याकुल हो :- क्षुधातुर
6. जो रस से पूर्ण हो :- सरस
7. राजगद्दी का उत्तराधिकारी :- युवराज
8. दो धाराओं / नदियों के मिलन का स्थान :- संगम
9. जो सौ बातें एक साथ याद रख सकता है :- शतावधानी
10. जो आकाश में चलता हो :- खेचर
11. ज्ञान संबंधी / विज्ञान का विद्वान :- वैज्ञानिक
12. सौ वर्ष की अवधि :- शताब्दी
13. जिसकी ग्रीवा सुंदर हो :- सुग्रीव
14. इंद्रियों को वश में करने वाला :- इंद्रियजित
15. आलोचना करने वाला :- आलोचक
16. जिसका कभी अन्त न हो :- अनन्त
17. जिसके पास धन न हो :- निर्धन
18. किसी को भय से बचाने का वचन देना :- अभयदान
19. जिसको भय न हो :- निर्भय
20. आकाश में विचरण करने वाला :- नभचर
21. जो सबके अन्तः करण की बात जानने वाला हो :- अन्तर्यामी

22. चिंता उत्पन्न करने वाला :- चिंताजनक

23. जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो :- अजातशत्रु

24. दो बार जन्म लेने वाला :- द्विज

25. जो स्त्री के वशीभूत हो :- स्त्रैण

26. जो अवधान पूर्वक काम करता हो :- सावधान

27. जो अनुकरण करने योग्य हो :- अनुकरणीय

28. सात दिनों की अवधि :- सप्ताह

29. पर्वत की कन्या :- पार्वती

30. जो दण्ड पाने योग्य न हो :- अदंडनीय

31. वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो :- आगतपतिका

32. अच्छा बुरा समझने की शक्ति :- विवेक

33. जीतने की इच्छा :- जिगीषा

34. जो सुख देता हो :- सुखद

35. रक्त से लथपथ :- रक्तरंजित

36. संचय किया हुआ :- संचित

37. जिसका मन कहीं अन्य लगा हो :-

38. जिसपर विश्वास न हो :- अन्यमनस्क

39. जो स्त्री विद्वान हो :- विदुषी

40. जो पुरुष लोहे की तरह बलिष्ठ हो :- लौहपुरुष

समास

परिभाषा :- जब दो या दो से अधिक शब्दों के बीच आने वाले विभक्ति-चिन्ह या संबंधसूचक शब्दों का लोप हो जाता है और एक नया शब्द बनता है, तो उसे समास कहते है।

अर्थात् :- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बना नया शब्द समास कहलाता है।

उदाहरण :- राजा का पुत्र → राजपुत्र
हाथ से। के द्वारा लिखित → हस्तलिखित

* समास के भेद :-

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास :-

जिस समास में पहला पद प्रधान होता है और पहला पद प्रायः अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान :- यथा, प्रति, हर, बे, आ

उदाहरण :-

प्रतिदिन / हर → प्रत्येक दिन, हर दिन

यथाशक्ति → शक्ति के अनुसार

यथासंभव → जितना संभव हो

आजीवन → जीवन भर

बेशक → शक के बिना

जब एक शब्द दो बार आजाए :- घर-घर, हाथो-हाथ

२. तत्पुरुष समास :-

जिस समास में उत्तरपद / दुसरा पद प्रधान होता है और दोनों पदों के बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

उदाहरण :- राजपुत्र → राजा का पुत्र

तत्पुरुष के ६ प्रमुख भेद :-

① कर्म तत्पुरुष :- विग्रह में 'को' का संबंध हो।

उदाहरण :- ग्रामगत → ग्राम को गया हुआ
यशप्राप्त → यश को प्राप्त

② करण / कर्ण तत्पुरुष :- विग्रह में 'से / के द्वारा' आए।

उदाहरण :- हस्तलिखित → हाथ से लिखा हुआ
तुलसीकृत → तुलसी के द्वारा रचित

③ संप्रदान तत्पुरुष :- विग्रह में 'के लिए' आए।

उदाहरण :- रसोईघर → रसोईघर के लिए घर
देशभक्ति → देश के लिए भक्ति

④ अपादान तत्पुरुष :- विग्रह में 'से' आए।

उदाहरण :- धनहीन → धन से हीन
रोगमुक्त → रोग से मुक्त

⑤ संबंध तत्पुरुष :- विग्रह में 'का/के/की' आए।

उदाहरण :- राजपुत्र → राजा का पुत्र
देशवासी → देश का वासी

⑥ अधिकरण तत्पुरुष :- विग्रह में 'में/पर' आए।

उदाहरण :- वनवास → वन में वास
घुड़सवार → घोड़े पर सवार

3. कर्मधारय समास :-

जिस समास में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है तथा दोनों में एक ही वस्तु/व्यक्ति का बोध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

उदाहरण :- नीलकमल → नीला है जो कमल
महापुरुष → महान है जो पुरुष

4. द्विगु समास :-

जिस समास में का पहला पद संख्यावाचक हो और पूरे समस्त पद से किसी समूह या समुदाय का बोध हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।

उदाहरण :- त्रिभुवन → तीन भुवनों का समूह
नवरात्र → नौ रातों का समूह
चौराहा → चार राहों का समूह
त्रिकोण → तीन कोणों का समूह

5. द्वंद्व समास :-

जिस समास में दोनो पद प्रधान होते हैं और विग्रह करने पर दोनों के बीच 'और / तथा' लगाया जा सकता है, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

उदाहरण :- माता-पिता → माता और पिता
राम-लक्ष्मण → राम और लक्ष्मण
सुख-दुख → सुख और दुख

6. बहुव्रीहि समास :-

जिस समास में न तो पहला पद प्रधान होता है और न दुसरा पद, बल्कि समस्त पद से किसी अन्य व्यक्ति / वस्तु का बोध होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

विग्रह में 'जिसका / जिसके / जिसकी' आता है।

उदाहरण :- दशानन → दश मुख हैं जिसके → रावण
नीलकंठ → नीला है कंठ जिसका → शिव जी
लंबोदर → लंबा है उदर जिसका → गणेश जी
चक्रपाणि → चक्र है हाथ में जिसके → विष्णु
पीतांबर → पीला कपड़ा है जिसका → श्रीकृष्ण

* द्विगु और बहुव्रीहि में अंतर :-

त्रिनेत्र → तीन नेत्र है जिसके → भगवान शिव

↳ यहाँ कोई समूह नहीं, बल्कि तीसरे व्यक्ति का बोध हो रहा है।

↓

बहुव्रीहि

त्रिभुवन → तीन भुवनों का समूह

↳ द्विगु

* कर्मधारय और बहुव्रीहि में अंतर :-

नीलकमल → नीला है जो कमल

↳ कर्मधारय , यहाँ कमल की विशेषता नीला बता रहा है।

नीलकंठ → नीला है कंठ जिसका → शिव जी

↳ बहुव्रीहि

अलंकार

परिभाषा :- काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों को अलंकार कहते हैं।

जैसे आभूषण शरीर की सुंदरता बढ़ाते हैं, वैसे ही अलंकार काव्य की सुंदरता बढ़ाते हैं।

उदाहरण :- मुख चंद्रमा के समान सुंदर है।

* अलंकार के भेद :-

1. अनुप्रास अलंकार :-

जब किसी काव्य-पंक्ति मे एक ही वर्ण / व्यंजन की बार-बार आवृत्ति होती है और उससे सुंदरता उत्पन्न होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण :- चारू चंद्र की चंचल किरणें
तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए

2. यमक अलंकार :-

जब एक ही शब्द एक से अधिक बार आए, लेकिन प्रत्येक बार उसका अर्थ अलग हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण :- कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय
↓ ↓
सोना धतूरा

3. श्लेष अलंकार :-

जब एक ही शब्द से एक से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :- रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून

यहाँ पानी के अलग - अलग अर्थ लिए जाते हैं :-

- जल
- सम्मान / प्रतिष्ठा
- चमक

4. <u>उपमा अलंकार</u> :-

जब किसी वस्तु / व्यक्ति की समानता किसी दूसरी वस्तु / व्यक्ति से बताई जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

पहचान :- सा, सी, से, समान, जैसे, जैसा, सदृश, तुल्य, मानो

उपमा के चार अंग :-

1. उपमेय - जिसकी तुलना की जाए
2. उपमान - जिससे तुलना की जाए
3. साधारण धर्म - दोनों में समान गुण
4. वाचक शब्द - समानता बताने वाला शब्द

उदाहरण - उसका मुँह चंद्रमा के समान सुंदर है।

↓ उपमेय ↓ उपमान ↓ वाचक शब्द ↓ साधारण धर्म

5. <u>रूपक अलंकार</u> :-

जब उपमेय और उपमान दोनों को एक ही मान लिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण :- चरण - कमल बंदौं हरि राई।

↓ उपमेय ↓ उपमान

उपमा :- उसके चरण कमल के समान हैं।

रूपक :- उसके चरण कमल हैं।

6. उत्प्रेक्षा अलंकार :-

जहाँ किसी वस्तु में संभावना या कल्पना व्यक्त की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

पहचान :- मानो, मानहुँ, मनु, जनु, जानो, लगता है, जैसे

उदाहरण :- मानो चाँद धरती पर उतर आया हो।

उपमा :- वास्तव में तुलना

उत्प्रेक्षा :- संभावना / कल्पना

7. अतिशयोक्ति अलंकार :-

जब किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :- हनुमान ने एक ही छलांग में समुद्र पार कर लिया।

8. मानवीकरण अलंकार :-

जब प्रकृति / निर्जीव वस्तुओं को मनुष्य के गुण या क्रियाएँ प्रदान की जाएँ, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

उदाहरण :- हवा गुनगुना रही है।